समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• मई २०२२ • वर्ष ७३ • अंक ०५

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

इस अंक में :

अध्यक्षीय :

- जल ही जीवन है : जरुरी है इसका संरक्षण एवं संचयन

सम्पादकीय :

- मनुष्य अक्षय आनंद का स्वामी है!

रपट :

- सम्मान समारोह - डॉ. डी. के. टकनेत
- राष्ट्रीय अध्यक्ष का बिहार दौरा

प्रादेशिक समाचार :

- पूर्वोत्तर, बिहार, तमिलनाडु

आलेख :

- मरु-मेघ रा चातक
- स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की क्रांतिकारी भूमिका में राजस्थान का प्रभाव

विविध :

- स्वास्थ ही धन है • लघुकथावां
- सम्मेलन में नये सदस्यों का स्वागत!

Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand- 833201
Email - tmtsales@rungtasteel.com

समाज विकास

◆ मई २०२२ ◆ वर्ष ७३ ◆ अंक ५
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** मनुष्य अक्षय आनंद का स्वामी है!	४-५
● **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** जल ही जीवन है : जरुरी है इसका संरक्षण एवं संचयन	६-७
● **रपट –** सम्मान समारोह – डॉ. डी. के. टकनेत राष्ट्रीय अध्यक्ष का विहार दौरा	८ ११-१२
● **प्रादेशिक समाचार –** पूर्वोत्तर, विहार, तमिलनाडु	७, १३-१५
● **आलेख** ■ मरू-मेघ रा चातक – डॉ. तैस्सीतोरी ■ स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की क्रांतिकारी भूमिका में राजस्थान का प्रभाव – रतन लाल बंका ■ समाज के सम्बन्ध में भावी योजनाएँ – डॉ. टकनेत	१६-१७ १८-२१ २२
● **विविध –** स्वास्थ्य ही धन है, लघुकथावां	१२, २३
● देव-स्तुति : डॉ. जुगल किशोर सर्राफ	२४
● सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत	२५-२६

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९
पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

५ जून को दिल्ली में प्रदान किये जायेंगे राजस्थानी भाषा-साहित्य पुरस्कार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रत्येक वर्ष दिया जाने वाला **सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा-साहित्य सम्मान तथा केदारनाथ भागीरथी देवी राजस्थानी भाषा बाल-साहित्य सम्मान रविवार, ५ जून को दिल्ली स्थित तेरापंथ भवन, छतरपुर मंदिर रोड सभागार में प्रदान किये जायेंगे।** इसके लिए पुरस्कार चयन समिति के चेयरमैन पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला, संयोजक श्री संतोष सराफ तथा मायड़ भाषा उपसमिति के चेयरमैन श्री रतन शाह की उपस्थिति में आयोजित बैठक में पहले से ही क्रमशः राजस्थान के हनुमानगढ़ निवासी साहित्यकार श्री रामस्वरूप किसान तथा राजस्थान के ही राजसमंद निवासी श्रीमती दमयन्ती जाडावत 'चंचल' के नामों का चयन हो चुका है। पारम्परिक तरीके से होने वाले सम्मान के तहत उन्हें २१ हजार रुपयों की राशि तथा मानपत्र भी प्रदान किया जायेगा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

मनुष्य अक्षय आनंद का स्वामी है!

अक्सर आपसी वार्तालाप में लोगो को यह कहते सुना जाता है कि आजकल लोग अपने दुख से दुखी होने से ज्यादा दूसरों के सुख से दुखी हैं। सोचने की बात है। इस प्रकार हमारे नकारात्मक सोच के कारण हम स्वयं को दुखी बनाने के जिम्मेदार है। सकारात्मक विचार एवं नकारात्मक विचार बीज की तरह होते है, जिन्हे हम अपने मस्तिष्क में बोते है। नकारात्मक विचार हमें दुखी बना देता है। सकारात्मक विचार हमारे जीवन को खुशियों से भर देता है। एक दिन एक छोटा सा बालक जो कि प्राइमरी स्कूल का छात्र था, अपने घर वापस आया। उसके पास एक पत्र था, जिसे विद्यालय में उसके शिक्षक ने उसे दिया था। उस बालक ने माँ को बताया "मेरे शिक्षक ने यह दिया है और कहा है कि अपनी माँ को ही देना"। उसने यह भी बताया कि शिक्षक ने कल से उसे विद्यालय आने से मना किया है। उस कागज को पढ़कर माँ की आखों में आँसू आ गए। बच्चे के पूछने पर माँ ने कहा यह तो खुशी के आंसू है। उसके शिक्षक ने कागज मे लिखा है कि आपका बेटा एक जीनियस है। हमारा स्कूल छोटे स्तर का है। हमारे यहाँ शिक्षक इतने प्रशिक्षित नही है कि आपके बच्चे को शिक्षा दे सके। आप उसे स्वयं शिक्षा दे। कुछ वर्षों बाद माँ का देहांत हो गया।

वह बालक बाद में चलकर एक महान वैज्ञानिक बना जिसका नाम थामस एल्वा एडिसन था। एक दिन वे घर के पुराने सामान देख रहे थे। आलमारी के एक कोने में एक कागज पड़ा था। उसे याद आया कि यह वही कागज है जो उसके शिक्षक ने माँ को भेजा था। खोल कर देखा, उसमें लिखा था – "आपका बच्चा बौद्धिक तौर पर कमजोर है, उसे इस स्कूल में अब और नही आना है।" इस तरह एक माँ की सकारात्मक सोच ने एक कमजोर बच्चे को एक महान वैज्ञानिक बनने का मार्ग प्रशस्त किया।

सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति सदैव प्रसन्न, शांत एवं कर्मशील रहता है। बाहरी नकारात्मकता उसे प्रभावित नही कर पाते। एक व्यक्ति टैक्सी मे बैठकर जा रहा था। अचानक उसके टैक्सी के सामने एक गाड़ी आ गई। टैक्सी चालक ने तेजी से गाड़ी रोकी एवं हादसा होते-होते बच गया। टैक्सी चालक ने गाड़ीवाले की बातों का संज्ञान नही लिया और माफी मांगते हुए आगे बढ़ गया। उस यात्री को आश्चर्य हुआ। उसने चालक से पूछा कि गलती उस गाड़ी वाले की थी, फिर भी आपने उसे कुछ नहीं कहा।

टैक्सी चालक की बात हमेशा याद रखने लायक थी। उसने कहा कि साहब बहुत से लोग कुड़ेदान की तरह होते हैं, उनके दिमाग में क्रोध, घृणा, चिंता, निराशा जैसा कूड़ा भरा रहता है। जब उनके दिमाग में यह कूड़ा अधिक हो जाता है तो वे अपना बोझ हल्का करने के लिये दूसरो पर लादने का मौका ढूंढते रहते है। ऐसे लोगों के मुँह लगने से मैं भी कूड़ेदान की तरह हो जाऊँगा।

साकारात्मक सोच के साथ हम न सिर्फ हमारे दिमाग को कूड़ों से साफ रख सकते है बल्कि हमारे जीवन में जो अभाव की धारणा होती है उससे भी निपट सकते हैं। हमेशा हम सोचते रहतें है कि हमे जो चाहिए, वह हमे नही मिलता। हम यह भूल जाते है कि पूरी प्रकृति प्रचुरता से भरा हुई है। यदि हम अपने मन में संदेह एवं अभाव की भावना को प्रवेश नही करने देंगे तो हमारा जीवन बहुतायत से भर जायगा। ब्रह्मांड में निरंतर प्रचुरता का निर्माण हो रहा है। बहुतायत की भावना अंदर से आती है। अगर हम प्रकृति में पेड़ की ओर नजर डालेंगे तो देखेंगे कि कितने अनगिनत फल या फूल, पत्तियाँ, शाखाओं का समावेश रहता है एक पेड़ में। ऐसे पेड़ो की संख्या भी इस ब्रह्मांड में अनगिनत है। सागर के तीर पर खड़े होने पर अथाह जल राशि, ऊपर आकाश पर दृष्टि डालने से उसकी अनंतता हमें प्रचुरता का आभास कराती है। इसी प्रकार लाखों प्रकार के जीव जन्तु, भिन्न-भिन्न प्रकार के मानव, सभी प्राणियों के लिये सब प्रकार के संयोजन–धरती के गर्भ में अनंत मात्रा में खनिज, तेल, गैस इत्यादि। भोजन के दानों में समायें हुए खनिज, विटामिन, मज्जा, रक्त, प्रोटीन इत्यादि। सबके अलावा प्रकृति ने मानव को अनगिनत संभावनाओ के साथ जन्म दिया है। मनुष्य भिन्न-भिन्न क्षमताओं एवं विशेषताओं के साथ बनाये गये है। हम अपने नकारात्मकता के कारण जो हमारे पास है उस पर ध्यान केन्द्रित नही करते। जो नहीं है उसके बारे में सोचते हुए अभाव व अपर्याप्तता के भाव में जीवन यापन करते है। प्रचुरता महसूस करने के लिये हमे बाहरी कुछ करने की आवश्यकता नही। खुशी, आशा, प्रेम के बीज बोओ, सब कुछ बहुतायत के साथ आपके पास लौट आयेगा। जीवन के लिये सभी अत्यावश्यक उपादान जैसे जल, वायु, भोजन आदि की व्यवस्था प्रकृति द्वारा हमारे लिये की गई है।

हमारे सोच में दूसरो से प्रतिद्वंदिता, तुलना करने की भावना के कारण हम अभाव महसूस करने लगते है। काश, मेरे पास उसके जितना पैसा होता, काश मैं उसके जितना सुंदर होता, काश मैं उसके जितना पढ़ा-लिखा होता, काश मेरे पास उसकी तरह सुख-सुविधा होंती। इन भावनाओं के फलस्वरूप हम हमारे इर्द-गिर्द एक नकारात्मक उर्जा की सृष्टि कर लेते हैं। आप एक जीवित चुम्बक हैं। आपके विचारों के अनुसार ही प्रकृति के उर्जा को आप आकर्षित करते हैं। हम सभी चाहते हैं कि हमारे जीवन में वह सब हो, जो हमारे पास नही हैं। पर हम यह नही सोचते कि सफल जीवन जीने के लिये जो भी आवश्यक उपादान है, वह सब हमारे पास पहले से उपस्थित है। उन उपादानों को आप अपने लगन, निष्ठा, श्रम से फलीभूत कर सकते हैं। जीवन में कुछ बाते या घटनाएँ ऐसी होती है जिनके होने से हमें अच्छा या सुख महसूस होता है, जैसे नौकरी मे पदोन्नति, स्वादिष्ट भोजन, सफलता। किन्तु सर्वोत्तम भाव है – "कुछ भी संभव है"। जब हम अपने जीवन में प्रचुरता अनुभव करते है, तो प्रचुरता बढ़ती है। यदि आप नकारात्मकता पर ध्यान केन्द्रित करते है तो आपको नकारात्मकता महसूस होगा। इसी प्रकार का संदेश लेकर आता हैं अक्षय तृतीय का पर्व। मान्यता है कि इस दिन दिये जाने वाला दान का फल अक्षय होता है, यानि इस का फल जन्म-जन्मांतरो तक मिलता है। इसीलिये इस दिन को दान का महापर्व भी जाना गया है।

हम अगर सही ढंग से सोचे तो देने की प्रवृति में प्रचुरता का भाव नीहित है। सर्वप्रथम बात यह कि जो आप दे देते है, उसको आपसे कोई चुरा नही सकता। यह माना गया है कि देना ही जीवन है। लेना मृत्यु के समान है। हमारे संस्कार एवं संस्कृति में अनादिकाल से इस प्रकार के भावनाओ का संवर्धन होता आया है। गुरुद्वारे में लगने वाले लंगर, हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में होने वाले भंडारे में प्रचुरता का भाव रहता है। खास बात यह है कि प्रचुरता के भाव के लिये धन-दौलत का विशेष महत्व नही रहता है। तीन दोस्त एक भंडारे मे भोजन कर रहे थे। आपस में बातचीत में वे अपना अफसोस जाहिर कर रहे थे कि उनकी खर्च करने की ऐसी स्थिति नहीं हैं, ताकि वे भंडारा आयोजित कर सकें। उनके पास बैठे एक महात्मा उनकी बात सुनकर बोले – भंडारा करने के लिए धन की नही मन की आवश्यकता होती है। रोज ५-१० ग्राम आटा लो, उसे चीटियों के खाने के लिये रख दो। चावल दाल के कुछ दाने लो, छत पर विखेर दो। एक पात्र में पानी भरकर रख दो। चिड़िया-कबूतर खायेगे-पीयेंगे। गाय, कुत्तों को रोटियाँ दो। बस हो गया भंडारा। किसी भी जीव जंतु को भोजन देने का कार्य जनकल्याण भाव से करने में मन में प्रचुरता की भावना प्रबल होती है।

यह सोचना गलत है कि धन ही प्रचुरता का भाव ला सकता हैं। अमेरिका से सर्वाधिक धनी व्यक्ति जान. डी. राकफेलर को स्वामी विवेकानंद ने जनकल्याण के लिये दान देने की महत्ता के बारे में बताया था। ऐसा समझा जाता है कि जनकल्याण के लिये अपना पहला दान स्वामीजी के साथ बैठक के बाद उन्होंने दिया था। मृत्यु से पहले राकफेलर ने अपनी डायरी में लिखा था –

देने का सुख ही जीवन जीने का सुख है!

दुनिया की सारी दौलत से ज्यादा जरुरी है मन की शान्ति। यह समझने की आवश्यकता है कि जीवन का आनंद लेने के लिये धन की स्थिति से अधिक मन की स्थिति महत्वपूर्ण होती है। एक धनी व्यक्ति से उसके अवकाश लेने के बाद पूछा गया है – आप तो अथाह सम्पत्ति के मालिक है। इसके जबाव में उन्होंने कहा – नहीं, जो मैनें अपने हाथो दे दिया, वह धन एवं सामग्री ही मेरी हैं। जो बाकी बचा है, वह तो मुझे छोड़ के जाना है। देने की मनःस्थिति से हमारा जीवन विस्तार पाता है। हममें आनंद एवं प्रचुरता का भाव बढ़ता है। जिस व्यक्ति को पाने की लालसा रहती हैं उसकी दीन-हीन स्थिति रहती हैं। सुख एवं आनंद से वह वंचित रहता है। एक व्यक्ति से स्वर्ग के चित्रगुप्त ने पूछा अब तुम्हारे धरती पर वापिस जाने का समय आ गया है। तुम यह बताओ, तुम्हे किस प्रकार का जीवन चाहिए। वह व्यक्ति अत्यंत ही लोभी प्रकृति का था। उसने कहा कि मुझे ऐसा जीवन चाहिए जिसमें किसी को भी मुझे कुछ देना नही पड़े। सब मुझे ही दे दें। चित्रगुप्त ने उसकी इच्छानुसार उसका जीवन निर्धारित कर दिया। वह जहाँ भी बैठता कोई उससे कुछ भी नही मांगता। सभी उसे देते। लेकिन शहर मे वह भिखारी का जीवन जी रहा था।

पाने की लालसा सिर्फ धन तक ही सीमित नही होती। हमें दूसरों से प्रशंसा पाने की चाहत भी बैचेन करती रहती है। प्रशंसा पाने के लिये हम सदैव ऐसे काम करते रहते है जो अनावश्यक होते है, खर्चीले होते है। हम उन कार्यों को इसलिये अंजाम देते है ताकि लोग हमारी प्रशंसा करेंगे। ऐसा कहा जाता है कि जिन साधु-महात्माओं ने वैराग्य साधने के पथ पर धन, लोभ का मार्ग छोड़ दिया उनसे भी 'लोकेषणा' छूटना अत्यंत ही कष्टकर होता है। हमें सदैव अन्य लोगो की प्रशंसा पाने की आशा रखने के बजाय आत्मचिंतन एवं संयम बरतते हुए स्वयं में उपस्थित प्रचुरता को महसूस करते हुए जीवन यापन करना चाहिए। ऐसी मनःस्थिति हमें सदैव आनंद का बोध करवाती रहेगी। इसी से हम जीवन को पूरी तरह जी सकेंगे एवं मानव जीवन को सार्थक कर सकेंगे।

शिव कुमार लोहिया

अध्यक्षीय

जल ही जीवन है : जरूरी है इसका संरक्षण एवं संचयन

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

स्नेही बन्धुगण,

सादर अभिनन्दन!

आशा है कि प्रभु कृपा से आप सभी सपरिवार कुशल एवं स्वस्थ होंगे। इस बार मार्च माह से ही गर्मी ने अपना रंग दिखाना शुरु कर दिया था। अप्रैल माह में तो सैंकड़ो सालों के रिकार्ड को ध्वस्त होते हुए नए रिकार्ड बने हैं। मई माह में गर्मी चरम पर है। पूरा देश तप रहा है। कहीं कहीं तो पारा ४८० से. तक पहुंच गया है। गुष्म ऋतु में लू एवं पेट की बिमारियों से सावधान रहना एवं सतर्कता जरूरी है। आप सभी अपना खयाल रखें।

गर्मी के चलते दूसरी परेशानी बिजली की है। २० अप्रैल २०२२ का प्रभात खबर रांची समाचार पत्र मेरे सामने है। प्रथम पृष्ठ पर एक शीर्षक है– लगातार दूसरे दिन रांची का तापमान ४१० पार, जो सामान्यतः अप्रैल माह में ३५-३६० रहता है। अन्दर के पृष्ठों में एक और शीर्षक – एक तो गर्मी ऊपर से बिजली कट, पूरी रात करवट बदलते ही गुजरी। अन्य छोटे-छोटे शीर्षक – *"बिजली संकट पर सरकार का फोकस नहीं है" *"बिजली की समस्या से लोग कर रहे हैं त्रहिमाम" *बिजली और पानी संकट से जनता बेहाल * उफ ये गर्मी: सूख रहे हैं शहर के तालाब व बोरिंग, गला तर करना भी हुआ मुश्किल *३५० फीट बोरिंग भी देने लगी जवाब * तीन घंटे में भी नहीं भर रही है २००० लीटर की पानी टंकी *गर्मी के कारण भूमिगत जलस्तर काफी नीचे चला गया।

यह हाल केवल राँची का नहीं, प्रायः सभी शहरों का है। एक तो हाल बेहाल करने वाली गर्मी से होने वाली परेशानी का सबब। लू का स्पर्श कांटे चुभने जैसा आभास देता है। दूजे गर्मी में बिजली समस्या बराबर रहती है। तीसरे गर्मी में पानी की पर्याप्त उपलब्धता बहुत बड़ी समस्या है।

भूगर्भ जलस्तर पूरे देश में बराबर नीचे जा रहा है। यह एक सोचनीय मसला है। १५-२० वर्षों में ही स्थिति बद से बदतर हो गई है, भविष्य की सोचकर तो रूह कांप जाती है। क्या होगा बिना पानी के। जल ही जीवन है, जल नहीं रहेगा तो जीवन कैसे रहेगा। जल नहीं रहने की कल्पना से ही कपकपी होती है। आईए हम सब मिलकर इस विषय पर मनन करें और जल को बचाने में अपना बहुमूल्य सहयोग दें।

* **वृक्षारोपण :** वृहद पैमाने पर वृक्षारोपण होना चाहिए। जंगल लगेंगे तो वर्षा ज्यादा होगी। वर्षा ज्यादा होगी– भूगर्भ जलस्तर भी बढ़ेगा। साथ ही वर्षा ज्यादा होगी तो गर्मी कम पड़ेगी। गर्मी कम पड़ने से पानी की और बिजली की खपत भी कम होगी। फलतः पानी की बचत होगी और जलस्तर गिरने से बचेगा। वृक्षारोपण से और भी कई लाभ हैं। कई प्रकार के फल-फूल, औषधीय पेय पदार्थ आदि मिलेंगे जो गांवों की आर्थिक स्थिति के सुधार में सहायक सिद्ध होंगे। साथ ही साथ पर्यावरण भी शुद्ध होगा।

* भूगर्भ जल संचयन हर घर में जहाँ सम्भव हो वर्षा से भूगर्भ जल संचयन का कार्य होना चाहिए। पूरे भारत में वर्षा कम-ज्यादा हर जगह होती है। जल संचयन से जल के उपयोग की क्षति पूर्ति होगी। घरों के अलावा जहां भी सरकारी खाली जमीन है वहां पर बड़े टावर बनाकर उसके छत पर पानी एकत्र करके भूगर्भ में जल के संचयन का कार्य किया जाना चाहिए। मुझे राजस्थान में बिताया अपना बचपन याद है जहां प्रत्येक सम्पन्न घर में एक होद (कुंड) होता था जिसमें वर्षा का पानी संचित किया जाता था एवं साल भर पीने के काम लिया जाता था। बरसात में नालियों के पानी का उपयोग जगह-जगह रिचार्जिंग पिट बना कर करना चाहिए ताकि वह पानी सीधे भूगर्भ मे जाए।

* **झील एवं तालाबों का निर्माण :** पहले गांवों में शहरों में तथा मोहल्लों में तालाब हुआ करते थे। भूमि के मूल्य बढ़ने से तालाब भरवा दिए गए और उनका स्थान बड़े-बड़े कॉम्प्लेक्सों ने ले लिया। तालाबों से जल का भूस्तर बना रहता था। अतः सरकार को चाहिए कि जहां भी उनकी खाली जमीन है वहां तालाबों का निर्माण करवायें। इससे पानी भी मिलेगा, जलस्तर भी बढ़ेगा तथा पर्यावरण भी शुद्ध होगा। तालाबों में कमल के फूल, पानीफल तथा तालमखाना की खेती से आर्थिक लाभ भी होगा। सरकार को खाली जमीन पर मल्टी कॉम्पलेक्स की कल्पना छोड़कर तालाब एवं पार्क बनवाने चाहिए।

* **नदियों को जोड़ना :** सर्वप्रथम छोटी-छोटी नदियों को आपस में जोड़ना चाहिए। इसके उपरान्त उन्हें बड़ी नदियों से मिलाना चाहिए। इस जुड़ाव से नदियों में साल भर पानी रहेगा। नदियों में साल भर पानी रहने से आसपास के क्षेत्र का जलस्तर सदा ऊँचा रहेगा। बरसात के मौसम में कुछ क्षेत्रों में बाढ़ से भी निजात मिलेगी। नदियों से नहरों का जाल बिछाना चाहिए इससे वहां खेती भी अच्छी होगी। नदियों एवं तालाबों में गन्दा एवं उद्योगों से निकला केमिकल युक्त जल न गिरने पाये, इस पर सख्ती से पालन होना चाहिए। उद्योग अपने यहाँ रीसाइक्लिंग उपकरण लगाये। नदियों एवं तालाबों की सफाई उचित अन्तराल पर बराबर होती रहनी चाहिए। नदियां साफ और गहरी होंगी तो वाटरवेज के रूप में भी काम आयेंगी। इन नदियों पर बिजली के लिए छोटे-छोटे हाईडल प्लांट लगाने चाहिए ताकि बिजली की कमी दूर हो। साथ ही साथ थर्मल प्लान्ट से होने बाले प्रदुषण से बचा जा सके।

* **समुद्र के पानी का स्वच्छीकरण :** भारत के तीन ओर समुद्र है। भारत में अपार समुद्र का जल उपलब्ध है। उसे नमक विहिन करने तथा स्वच्छ जल प्राप्त करने के लिए उपकरण लगाने चाहिए। इससे जल की बड़ी समस्या हल हो सकेगी।

* **जल की बरबादी को रोकना :** जल की बरबादी न हो यह हर नागरिक का कर्तव्य है। आवश्यकता अनुसार जल लेकर नल को

तुरन्त बन्द करना चाहिए। बेसिन की नल तथा घरों में अन्य नलें बिना वजह बहती रहती हैं। इस पर रोकथाम आवश्यक है। दाढ़ी बना रहे हैं नल खुली, कपड़े या बर्तन धो रहे हैं नल बराबर खुली रहती है। इस आदत में सुधार करना आवश्यक है।

✷ **गन्दे पानी का शुद्धीकरण :** बड़े-बड़े कॉम्प्लेक्सों में पानी की खपत बहुत होती है वहां पर वाश बेसिनों तथा स्नान किया हुआ पानी काफी मात्रा में निकलता है। इसको शुद्ध करके बागवानी तथा टॉयलेट में काम में लिया जा सकता है। बंगलुरू शहर में ऐसा हो भी रहा है। बागवानी में पीने वाले शुद्ध जल का उपयोग न हो।

✷ सड़कों पर सरकार ट्युबवेल लगाती है उनका रख रखाव अच्छे से होना चाहिए। उस स्थान पर नालियों में जो पानी जाता है, वह न जाए। इसके बजाये वहां 10x10x10 का गड्ढा खुदवाकर बालु गीट्टी, ईट का टुकड़ा डालकर पानी उसमें डालना चाहिए। ऊपर से गड्ढे को ढ़क दें।

सरकार को चाहिए कि विशेषज्ञों की एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन करके जल की समस्या के हल हेतु उनके सुझाव मांगे तथा उस पर आवश्यक कार्यवाही हो।

समाज के बन्धुओं से भी मेरी अपील है कि वे भी अपने स्तर से भूगर्भ जलस्तर बढ़ाने में अपना सहयोग करें। साथ ही साथ जल की बरबादी को भी रोकें। जिनके पास खाली भूखण्ड हैं वहां वृक्षारोपण करें। फलदार वृक्ष लगायें। आम के आम और गुठली के दाम वाली कहावत चरितार्थ होती है। प्रदुषण कम होगा पर्यावरण सुरक्षित होगा तथा खाने के लिए फल भी मिलेंगे। कवि रहीम कह गये है–

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गये न उबरे, मोती, मानुष चून।।

पेय जल के संकट का निवारण कर हमें अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करने का प्रयास करना चाहिए।

जय समाज जय राष्ट्र!

प्रादेशिक समाचार : पूर्वोत्तर

मारवाड़ी सम्मेलन की तिनसुकिया शाखा ने अग्निशमन कर्मियों का किया अभिनंदन

अंतर्राष्ट्रीय अग्निशमन कर्मी दिवस के अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन की तिनसुकिया शाखा द्वारा अग्निशमन कर्मियों का अभिनंदन किया गया। लपटों को चीरकर लोगों की जान बचाने वाले अग्निशमन दल के २५ जांबाज जवानों का आज तिनसुकिया स्थित फायर स्टेशन में मारवाड़ी सम्मेलन की तिनसुकिया शाखा द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन के शाखा अध्यक्ष विजय कुमार जैन ने तिनसुकिया स्थित फायर ब्रिगेड स्टेशन के प्रमुख इंस्पेक्टर विष्णु मोरान का असमिया संस्कृति के प्रतीक फुलम गमछा पहनाकर अभिनंदन करके उपस्थित समूचे कर्मचारियों का हौसला बढ़ाया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष रोशन भारद्वाज ने कहा कि विषम परिस्थितियों में तत्परता से कार्य करने वाले अग्निशमन विभाग के कर्मियों का जज्बा भी सभी के लिए मिसाल है। उन्होंने कहा कि इस कार्य के लिए शारीरिक क्षमता के अलावा आग पर काबू पाने की बहुत सी तकनीक सीखनी पड़ती हैं। अभिशमन दल के इंस्पेक्टर विष्णु मोरान ने कहा की अग्निशमन विभाग निस्वार्थ भाव से काम करता है तथा विभाग के अधिकारी और जवान अपनी जिंदगी दांव पर लगाकर लोगों के जान माल की रक्षा करते है। उन्होंने अग्निशमन दल के कर्मियों की बारीकियों को भी साझा किया। सभा को अध्यक्ष विजय कुमार जैन के अलावा प्रांतीय संयुक्त मंत्री पवन केजरीवाल ने भी संबोधित किया। श्री केजरीवाल ने अग्निशमन जांबाजो से प्रेरणा लेने का आव्हान किया। कार्यक्रम में सम्मेलन के अध्यक्ष विजय कुमार जैन, उपाध्यक्ष रोशन भारद्वाज प्रांतीय सह सचिव पवन केजरीवाल, संयुक्त सचिव मनोज अग्रवाल पेपर, सुरेश खेमका, श्याम सुंदर शर्मा जय प्रकाश गर्ग, राहुल जैन, अनुप जैन, दामोदर शर्मा किशोर शर्मा, प्रवीण अग्रवाल, तथा अमित चहड़िया सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में सम्मेलन के सभी कार्यकर्ताओं ने खड़े होकर अग्निशमन दल को सेल्यूट देकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

मारवाड़ीयों के योगदान पर शोधकार्य आवश्यक – गाड़ोदिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभागार में जयपुर से पधारे जाने–माने विख्यात डॉ. डी. के. टकनेत के सम्मान में एक सभा आयोजित कि गयी; डॉ. टकनेत का स्वागत करते हुये सम्मेलन के अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद जी गाड़ोदिया ने उनके कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि मारवाड़ियों के इतिहास एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों के योगदान के विषय में साधारण लोगों को बहुत ही अल्प जानकारी है। इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है। सम्मेलन इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हर सम्भव सहयोग देने को प्रस्तुत है। श्री गाड़ोदिया ने कहा कि मारवाड़ी समाज में समाज सुधार आंदोलन में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की महती

भूमिका रही है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी पाठकों को मिलनी चाहिये। उन्होंने डॉ. टकनेत को सम्मेलन की मासिक पत्रिका समाज विकास एवं सम्मेलन के कार्यों एवं उद्देश्यों की प्रतियाँ भेंट कि। उन्होंने कहा कि डॉ. टकनेत के कार्यों को साधारण समाज बंधुओं तक पहुँचाने में सम्मेलन अपनी भूमिका निभा सकता है। डॉ. टकनेत ने अपने शोधकार्य के विषय में बताते हुये कहा कि मारवाड़ियों के

विषय में उनके पुस्तकों को अमेरिका के अधिकांश पुस्तकालयों ने जगह दी है। मारवाड़ियों के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा देखी जा रही है। उन्होंने बताया कि यह बहुत काम लोग जानते है कि स्वतंत्रता आंदोलन में मारवाड़ियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था, लगभग २५० लोगों ने फांसी के फंदे पर चढ़ कर भारत माता को अपना बलिदान दिया था। डॉ. टकनेत ने बताया कि फिलहाल 'मारवाड़ी विरासत' नाम से हिन्दी में एक पुस्तक प्रकाशधीन है। इस पुस्तक को साधारण पाठकों को उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाने की योजना है। सभा में निर्वतमान अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, उपाध्यक्ष श्री भानी राम सुरेका, समाज विकास के संपादक श्री शिव कुमार लोहिया, सूचना तकनीक एवं वेबसाइट उपसमिति के चेयरमैन श्री कैलाशपति तोदी एवं संस्कार संस्कृति चेतना के चेयरमैन श्री प्रह्लाद राय गोयनका ने अपने विचार व्यक्त किये, और अन्त में संयुक्त महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस सभा में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारीगण कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका, वित्तीय उपसमिति के चेयरमैन श्री आत्माराम सोंथलिया, के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति सर्वश्री देवाशीष, बृजमोहन गाड़ोदिया एवं अशोक गुप्ता भी शामिल थे।

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
GARODIA
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**
- **Radiology**
  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study
- **Cardiology**
  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

सम्मेलन मारवाड़ी समाज का आईना और समाजबंधुओं का मित्र – गाड़ोदिया

अक्सर जब हम मारवाड़ी सम्मेलन की सदस्यता ग्रहण कराने के लिये समाज के बीच जाते है तो हमसे कुछ स्वाभाविक से प्रश्न किए जाते हैं, जैसे : सम्मेलन का सदस्य क्यों बनें, इससे क्या लाभ होगा? सम्मेलन क्या करता है? जब मारवाड़ी समाज के बहुत सारे संगठन पहले से बनें हुए हैं, तो फिर सम्मेलन की क्या प्रासंगिकता है?

इन्हीं सारे सवालों का जवाब खोजने और जानने के लिए बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के द्वारा सोमवार १६ मई २०२२ को, बुद्ध पूर्णिमा के शुभ दिन, एक सामाजिक विमर्श का आयोजन किया गया जिसका विषय था "सम्मेलन की प्रासंगिकता और उपयोगिता"।

यह हमारा सौभाग्य रहा कि इस विषय पर अपने सत्यात्मक विचार रखने हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद जी गाड़ोदिया ने बिहार प्रान्त का आमंत्रण स्वीकार किया और अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम को पूर्णता प्रदान की।

सर्वप्रथम आतिथ्य प्रदाता शाखा पटना के अध्यक्ष श्री शशि गोयल ने उपस्थित सदस्यों एवं समाजबंधुओं, जिसमें महिलाओं की उपस्थिति उल्लेखनीय थी, का स्वागत किया, तत्पश्चात प्रादेशिक अध्यक्ष श्री महेश जालान ने विमर्श हेतु विषय प्रवेश कराया, उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष से लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान करने के लिए विनम्र निवेदन किया।

इसके तत्काल बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने मुख्य विषय पर अपने विचार प्रकट किए, उन्होंने कहा कि सम्मेलन मारवाड़ी समाज का प्रतिबिंब और समाज का अवलम्बन है। सम्मेलन के द्वारा और सम्मेलन के अंतर्गत किए जाने वाले कार्यों से सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज की छवि निखरती है, पूरे देश और प्रदेश में किए जा रहे सेवा, संस्कार और संस्कृति के कार्यों से अन्य समाज को मारवाड़ी समाज की सेवा भावना, समृद्ध संस्कृति और वसुधैव कुटुंबकम के आदर्श का परिचय मिलता है। इसके साथ ही कई उदाहरणों के द्वारा उन्होंने बताया कि सम्मेलन मारवाड़ी समाज की हर विपदा के समय उनके साथ खड़ा रहता है, रास्ते चलते कोई घटना-दुर्घटना हो, चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार संबंधी या अन्य कोई आवश्यकता हो या फिर समाज के प्रति किसी इर्ष्यावश किसी प्रकार की अशोभनीय या निन्दनीय टिप्पणी हो, सम्मेलन ने सदैव आगे बढ़कर सशक्त और सकारात्मक भूमिका का निर्वाह किया है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि मारवाड़ी सम्मेलन एक ओर जहाँ समाज की एकजुटता और संगठन की मजबूती के लिए अति आवश्यक है वहीं दूसरी ओर वक्त जरूरत समाज का मित्र, सहायक और पथ प्रदर्शक भी है। आपने बताया कि सम्मेलन समाज में बढ़ रही किसी भी प्रकार की कुरीति या गलत व्यवस्था को सुधारने के लिए चिंतन का अवसर भी प्रदान करता है। श्रीमान के सारगर्भित वक्तव्य से एक ओर जहाँ उपस्थित जन समुदाय मंत्र-मुग्ध हुआ वहीं दूसरी ओर उन्हें सम्मेलन के विराट स्वरूप का आभास भी हुआ।

कार्यक्रम के अगले चरण में पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कमल नोपानी, पूर्व प्रादेशिक अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला और निवर्तमान प्रादेशिक अध्यक्ष श्री विनोद कुमार तोदी ने भी सभा को संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन पटना नगर शाखा के मंत्री श्री सुनील मोर और कार्यक्रम का संचालन श्री अंजनी सुरेका ने किया।

सामाजिक विमर्श के अंतिम चरण में सघन सेवा कार्यों के लिए श्रीमती केसरी अग्रवाल, पटना को बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से "नारी शक्ति सम्मान" राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने अपने हाथो से प्रदान किया इस कार्यक्रम में मारवाड़ी महिला समिति, मारवाड़ी युवा मंच, अग्रसेन सेवा न्यास, आध्यात्मिक सत्संग समिति, वनबंधु परिषद, मारवाड़ी हेल्थ सोसायटी, बिहार मारवाड़ी शिक्षा समिति, राधारानी ग्रुप आदि के अतिरिक्त पटना स्थित प्रादेशिक पदाधिकारियों, सदस्यों एवं समाजबंधुओं की सहभागिता रही।

सामाजिक विमर्श का सबसे उल्लेखनीय और आत्मीय पहलू यह रहा कि लगभग दस घंटे की थका देने वाली सड़क यात्रा के बावजूद कार्यक्रम मे विलंब होता देख राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गाड़ोदिया बिना एक क्षण विश्राम किए सीधे सभा स्थल पर पहुँच गए और दो घंटो तक पूरे कार्यक्रम में अपनी सहज सरल मुस्कान एवं गरिमामयी उपस्थिति से लोगों पर अपने विशिष्ट व्यक्तित्व की छाप छोड़ी।

ऐसा विश्वास है कि कम से कम बिहार प्रांत के संपूर्ण मारवाड़ी समाज के लिए यह सामाजिक विमर्श एक अति उपयोगी और चिर स्मरणीय कार्यक्रम रहा।

स्वास्थ्य ही धन है

गुड़ खाने के लाभ

गुड़ की ठोस वस्तु यानी गुड़ की भेली भी एक दवा है –

भोजन उपरांत १० से २० ग्राम गुड़ खाने से कभी वातरोग नहीं सताते, इसलिए हर हाल में गुड़ जरूर खाएं।

गुड़ शरीर के १०० अवगुण दूर करता है। गुड़ में अनंत गुण होने के कारण आदर्श निघण्टु ग्रन्थ में इसकी महिमा अपार बताई है। गुड़ देह को दुर्गुण से बचाता है।

गुड़ एक असरदायक औषधि है। गुड़ गुणों की खान है। यह उदर के गूढ़ रहस्यों-रोगो का नाशक है।

फायदे जानकर आप गुड़ खाने को मजबूर हो जाएंगे। जाने क्यों... आयुर्वेद ग्रन्थ वनस्पति कोष, आयुर्वेदिक चिकित्सा, सुश्रुत संहिता, भावप्रकाश, आयुर्वेद निघण्ठ आदि में गुड़ की विषेशताओं का विस्तार से वर्णन है। (१) गुड़ गन्ने (ईख) के रस से निर्मित होता है। ईख देह के कई दोषों का दहन करता है। (२) गुड़ प्राकृतिक पेट पीड़ाहर दवा है। (३) गुड़ में मौजूद तत्व तन के अम्ल (एसिड) को दूर करता है। जब चीनी के सेवन से एसिड की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे शरीर में हमारी व्याधियों से घिर जाता है। गुड़ के मुकाबले चीनी को पचाने में पाँच गुना ज्यादा ऊर्जा व्यय होती है। (४) गुड़ पाचनतन्त्र के पचड़ो को पछाड़ भोजन पचाकर पाचनक्रिया को ठीक करता है। (५) पुरानी कठोर कब्ज से मुक्ति हेतु रोज रात्रि में १५-२० ग्राम गुड़ २०० मि.ली. जल में उबालकर ४०-५० मि.ली. रहने के..उपरान्त चाय की तरह पीये तथा साथ में अमृतम। १० दिन के लगातार प्रयोग से कब्जियत पूरी तरह मिट जाती है। भूख खुलकर लगती है। (६) महिलाये खाने के साथ या बाद गुड़ खाये, तो शरीर के विषैल तत्व दूर होते है। (७) गुड़ खाने से त्वचा मे निखार आने लगता है। (८) सुन्दर स्वस्थ त्वचा तथा झुर्रियाँ मिटाने हेतु गुड़ का नियमित सेवन कर नारी सौन्दर्य ला सकते हैं। (९) हड्डियों को बलशाली बनाता है – गुड़! (१०) गुड़ मे कैल्शियम के साथ फॉस्फोरस भी होता है, जो हड्डियों को मजबूत बनाने में चमत्कारी है। (११) मूत्र सम्बन्धी समस्या और मूत्राषय की सूजन हेतु दुध के साथ लेवें। (१२) गुड़ निर्बल कमजोर शरीर वालो के लिए विशेष हितकारी है।

गुड़ के फायदे तभी है जब वो देशी/शुद्ध हो तभी लाभ है।

गुड़ तय मात्रा से अधिक नहीं लेना चाहिए।

प्रादेशिक समाचार : पूर्वोत्तर

बरपेटा रोड शाखा : रवींद्र नाथ ठाकुर जयंती पर रैली में शीतल जल की सेवा दी

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की बरपेटा रोड और मारवाड़ी सम्मेलन बरपेटा रोड महिला शाखा की तरफ से रवींद्र जयंती की रैली में शीतल पेय जल सेवा प्रदान करने के साथ-साथ उनके बीच चॉकलेट का वितरण किया गया। इसमें मारवाड़ी सम्मेलन बरपेटा रोड शाखा के सलाहकार शिवरतन राठी, नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुरेश चौधरी, नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष मनोज वैद, नवनिर्वाचित सचिव प्रमोद अग्रवाल, नवनिर्वाचित कोषाध्यक्ष संजय जाजोदिया, सदस्य कमल शर्मा, संजय खेमका और पुरुषोत्तम लाल कनोई और मारवाड़ी सम्मेलन बरपेटा रोड महिला शाखा की तरफ से सलाहकार अनुराधा माहेश्वरी, अध्यक्ष स्मिता शर्मा, सचिव कविता खेमका, सह सचिव सविता जैन, सदस्या सुमित्रा जैन, तारा सोनी और किरण सोनी तथा समाज बंधुओं का सहयोग सराहनीय रहा।

मातृ दिवस पर किया गया वृद्ध माताओं का सम्मान : गुवाहाटी शाखा

मातृ दिवस के उपलक्ष्य में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी शाखा की ओर से ८ मई २०२२ माताओं का सम्मान किया गया। शाखा सदस्यों ने घर-घर जाकर वयोवृद्ध माताओं का अभिनंदन किया।

इस दौरान करीब २८ माताओं को फूलाम गमछा एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इनमें रुक्मिणी देवी धानुका, गायत्री देवी भुवालका, निर्मला देवी अग्रवाल, धनपति देवी चांडक, गीता देवी बिड़ला, शौला देवी शर्मा, गीता रानी गाड़ोदिया, प्रेमलता खंडेलवाल, गीता देवी साबू, गीता देवी सराफ, पुष्पा देवी धूत, चंदा देवी अग्रवाल, सुमित्रा देवी अग्रवाल, बिनी देवी गर्ग, प्रीतम कौर, गीता देवी शर्मा, सम्पति देवी सराफ, भंवरी देवी डागा, नारायण देवी जालान, अमराव देवी जैन, निर्मला देवी काबरा, वीलायती देवी बंसल, गोदावरी देवी डाबरीवाल, मणि देवी अग्रवाल, कांता देवी सोनी, गोविन्दी देवी काबरा, सुशीला देवी बोथरा, कौसल्या देवी सैनी आदि शामिल है।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी शाखा द्वारा माताओं को दिए गए सम्मान से न केवल वे बल्कि उनके पूरे परिजनों ने तहे दिल से आभार व्यक्त किया। इस कार्य को संपादित करने में गुवाहाटी शाखा के सभी सदस्यों का भरपुर सहयोग रहा।

प्रादेशिक समाचार : बिहार

डेहरी ऑन-सोन शाखा की अल्पावधि यात्रा के दौरान शाखा मंत्री श्री वेद प्रकाश शर्मा के साथ शाखा अध्यक्ष श्री पवन झुनझुनवाला जी के आवास पर जाकर उनसे सांगठनिक मुलाकात की, श्री पवन जी ने अपने बेबाक विचारो से सम्मेलन के कुछ कार्यक्रमों को और अधिक सरल एवं व्यावहारिक बनाने का सुझाव दिया, संगठन संबंधी अनेक विषयों पर सार्थक चर्चा हुई।

डेहरी ऑन-सोन शाखा के आजीवन सदस्य श्री श्याम सुंदर अग्रवाल जी की सुपुत्री प्रियंका अग्रवाल को एमबीबीएस की परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के उपलक्ष में शाखाध्यक्ष श्री पवन झुनझुनवाला और शाखा मंत्री श्री वेद प्रकाश शर्मा के साथ उनके आवास पर जाकर "सरस्वती सम्मान" प्रदान किया गया।

शाखाओं ने दिखाया अमृत महोत्सव के आयोजन में उत्साह! तपती धूप से राहत पा कर आम जन ने कहा वाह-वाह!!

"कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं, बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा" भजन से प्रेरित होकर राजस्थान का पारंपरिक पर्व "आखा तीज यानी अक्षय तृतीया" पूरे बिहार में अत्यंत उमंग और उल्लासपूर्वक मनाया गया, प्रादेशिक अध्यक्ष श्री महेश जालान के आह्वान पर शाखाओं ने इसे "अमृत महोत्सव" के रूप में आयोजित किया, जिसके अंतर्गत १०४ शाखाओं के द्वारा १२४ स्थानों पर आम-आवाम और राहगीरों को स्वच्छ पेयजल, नींबू शिकंजी, गुलाब और खस का शरबत, बेल और तरबूज का जूस, छाछ और लस्सी, फ्रूटी आदि उपलब्ध कराया गया।

तपती गर्मी में हजारों-हजार लोगों ने इस सुविधा का लाभ उठाया और मारवाड़ी समाज को धन्यवाद दिया, संयोगवश इसी दिन ईद का त्यौहार भी था, जिसके कारण मुसलमान भाइयों ने भी "अमृत महोत्सव की सेवा" का भरपूर लाभ और लुत्फ उठाया, केवल सदस्य और समाजबंधु हीं नहीं, बड़ी संख्या में महिलाएँ और बच्चे भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए, कुछ शाखाओं में तो बहनें पारंपरिक परिधानों में और कहीं ध्वजा-पताका के साथ पेय पदार्थों के अतिरिक्त तरबूज, खीरा, खरबूजा, आम इत्यादि बाँट ती दिखाई दीं। हर जगह उत्सव का माहौल बना रहा।

कुछ शाखाओं ने अक्षय तृतीया के इस पुज्य दिवस पर "चापाकल और प्यूरीफायर के साथ वाटर कूलर" का भी शुभारंभ किया। बड़े और मध्यम शहरों से आगे बढ़कर कस्बाई और ग्रामीण शाखाओं ने अमृत महोत्सव" में बढ़-चढ़ कर भाग लिया और इसे एक अविस्मरणीय आयोजन बना दिया।

मारवाड़ी सम्मेलन चेन्नई ने दिव्यांगों को वितरित किए कृत्रिम अंग

तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन चेन्नई के तत्वावधान में, एस सी अग्रवाल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित एवं द्वारका दास गोवर्धन दास वैष्णव महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना विंग द्वारा संचालित दिव्यांग जनो के लिए कृत्रिम अंगों के वितरण के लिए शिविर का आयोजन किया गया जिसमें तमिलनाडु के विभिन्न हिस्सों से आए ९४ लोगों को कृत्रिम अंग प्रदान किए गए। यह वितरण कार्यक्रम ०१ मई २०२२ को कॉलेज के आडिटोरियम में किया गया।

मुख्य अतिथि श्री एम के मोहन तमिलनाडु विधानसभा सदस्य अन्ना नगर मुख्य अतिथि थे और उन्होंने चेन्नई में तमिलनाडु मारवाड़ी के प्रयासों की सराहना की। अध्यक्ष अशोक मूंधड़ा जी ने श्री मोहन जी को उत्तर भारतीय समुदाय के लिए अन्ना नगर के निकट श्मशान का आवेदन भी सौंपा।

श्री अशोक कुमार मूँधड़ा, अध्यक्ष तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने सभी का स्वागत किया।

श्री अजय कुमार नाहर परियोजना चेयरमैन ने अंग वितरण शिविर पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

डी जी बैष्णव कॉलेज के एन एस एस डिवीजन की ओर से डॉ. टी उमापति को सम्मानित किया गया और उनके छात्रों के प्रयासों को सराहा गया।

तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महासचिव श्री अशोक केडिया ने तमिलनाडु मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की और सह-संयोजक संजीव अग्रवाल ने प्रतिभागियों एवम सभी को धन्यवाद दिया।

श्री एस सी अग्रवाल चैरिटेबल फाउंडेशन ने शिविर को प्राथमिक दान दिया, जहां ९४ अंग जरूरतमंदो को वितरित किए गए। समूचे तमिलनाडु से मरीज जाए और उन्हें कैलिपर्स व्हीलचेयर और अन्य अंग दिये गए। सभी को खाने के पैकेट भी वितरित किए गए।

श्री संतोष बाबूजी प्राचार्य वैष्णव कॉलेज, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार सिंह, तमिल विभाग के अध्यक्ष डॉ. पी मुरूगन, डॉ. टी उमापति, डॉ. कल्पना देवी का विशेष सहयोग रहा।

सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री मुरारी लाल जी संथोलिया, उपाध्यक्ष श्री विजय कुमार गोयल, श्री विजय लोहिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा आदि का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर श्री राम अवतार जी रुंगटा, अमित माहेश्वरी, अनुराग माहेश्वरी, गोविंद प्रसाद जी अग्रवाल, के के नथानी आदि उपस्थित थे।

अनुवाद (आलेख)

(प्रसंग - डॉ. तैस्सीतोरी जयंती)

मरू-मेघ रा चातक : डॉ. तैस्सीतोरी

मूळ (हिन्दी) – डॉ. मदन केवलिया
राजस्थानी उल्थौ - जान्हवी केवलिया

अंग्रेज कवि ग्रे आपरी 'ऐलेजी' (शोक–गीत) में लिख्यो हो कै 'केई फूल रेगिस्तानी हवा मांय बिगर खुशबू फैलायां मुरझा जावै।' पण केई फूल इसा भी हुवै, जिका खुद री खुशबू चारूंमेर फैलांवता रैवै। डॉ. एल. पी. तैस्सीतोरी इसा ई पुष्प हा, जका रेगिस्तानी हवा में भी खुद री सुगंध सूं राजस्थानी भाषा साहित अर संस्कृति नै सुगंधित करता रैया।

तुलसी अर वाल्मीकि पर शोध–

१३ दिसम्बर १८८७ ई. नै उदीने (इटली) में जलम्या डॉ. तैस्सीतोरी नै भारतीय संस्कृति अर साहित्य सूं जलमजात हेत हो। टाबरपणै में ई वै केई भाषावां सीख गया हा। मायड़ भाषा इटेलियन रै अलावा अंग्रेजी, ग्रीक, लेटिन, जर्मन इत्याद यूरोपीय भाषावां तो सीखी ही, सागै ई अपभ्रंश, राजस्थानी (डिंगळ), हिन्दी, गुजराती इत्याद भाषावां नै भणण रो प्रयास कर्‌यो। २१ बरस री उमर में एम.ए. (अंग्रेजी) कर्‌यो। १९११ ई. में प्रों पैवोलिनी रै निर्देसण में 'तुलसीकृत रामचरितमानस अर वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन' विषय माथै लोरेंस विश्वविद्यालय सूं. पी-एच.डी. से उपाधि प्राप्त करी। तुलसी अर वाल्मीकि पर मौलिकता सूं शोधकार्य करनै वां भारतीय शोधकर्तावां नै नुंवी दसा-दिसा प्रदान करी। डॉ. तैस्सीतोरी रै खास मिंतर मारग्रेथ अेकर कैयो हो के 'डॉ. तैस्सीतोरी दूजै टाबरां री अपेक्षा घणा ई आज्ञाकारी अर अध्ययन में लीन रैवण आळा छात्र हा। वां रौ भारत रै बाबत हेत टाबरपणै सूं ई हो।'

भारत री पवित्र धरती–

भारत आवण सूं पैलां डॉ. तैस्सीतोरी, डॉ. हरमल जेकोबी रै कारण, जैनाचार्य विज धर्मसूरि रै सम्पर्क में आया अर वां सूं पत्राचार कर'र भारत भौम री जाणकारी हासिल करी। इण बिचालै वां राजस्थानी पांडुलिपियां से अध्ययन कर्‌यो। वै राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै बाबत जिज्ञासु बण्या। चावा भाषाविद् डॉ. ग्रियर्सन रै आग्रह पर कलकत्ता री 'एशियाटिक सोसायटी' डॉ. तैस्सीतोरीनै राजपूताना रै चारण साहित्य रौ सर्वेक्षण करणै सारू भारत आवण रौ नूंतो दियो। ८ अप्रैल १९१४ ई. नै हिवड़ै में 'डिवाइन कमिडी' (दांते) री विशाल कल्पना नै समेट'र जैसलमेर री मूमल री छवि नै आंख्यां में बसा'र, धोरां री धरती री खुशबू नाक में लेय'र डॉ. तैस्सीतोरी भारत री पावन धरती नै प्रणाम कर्‌यो अर राजस्थान नै आपणी कर्मभौम बणायी।

धरती धोरां री–

डॉ. तैस्सीतोरी रौ लक्ष्य हो–राजस्थानी री अप्राप्य अर अमूल्य पोथ्यां री खोज अर सर्वेक्षण। वां जोधपुर अर बीकानेर रा पुस्तकालयां नै काम रौ आधार बणायो अर 'उदेभाण चंपावत री ख्यात' में बतायोड़ी विविध खांपां री सूची त्यार कर'र आपणो काम सरू कर्‌यो। वे आचार्य सूरीजी नै गुरुतुल्य मानता हा। डॉ. तैस्सीतोरी जैन धर्म अर साहित्य सूं घणा प्रभावित हा। १९१४ ई. सूं लेय'र १९१९ (अंतिम बखत तांई) वै शोध कार्य में ई व्यस्त रैया।

'जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी' में डॉ. तैस्सीतोरी सर्वेक्षण रपट भेजता रैया, जिण सूं ठाह पडै कै आप कित्ते दुर्लभ ग्रंथां रीखोज करी।

पोथ्यां रौ अध्ययन–

इटली में रैवता थका डॉ. तैस्सीतोरी आचार्य सूरिजी सूं प्राकृत, अपभ्रंश अर डिंगळ री पोथ्यां प्राप्त करता रैया। आप सब सूं पैलां 'प्राकृत मार्गोपदेशिका' पोथी हासिल करी, जिण री सूचना आप १० जुलाई १९१३ ई. नै सूरिजी नै दी।

सर्वेक्षण सूं ठाह पड़ै कै कित्ती महताऊ पोथ्यां आप प्रकाश में लाया। 'अहिंसा दिग्दर्शन', 'जैनशासन विशेषांक', 'प्राकृत मार्गोपदेशिका' जिसड़े ग्रंथां री समीक्षा करी।

संपादन कार्य–

डॉ. तैस्सीतोरी राजस्थानी रै प्रख्यात ग्रंथां रौ संपादन करनै शोधकर्तावां नै नुंवी राह दिखायी। आपरा संपादित ग्रंथ है–

१. पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'किसन रुक्मिणी री वेलि'
२. वचनिका राठौड़ रतनसिंह (महेसदासोत री)
३. छंद राव जइतसी रउ (बिठू सूजइ रउ कहियउ)

इणां ग्रंथां में भूमिका, पाठांतर, कथ्य अर शिल्प री समीक्षा सूं नुंवी पीढ़ी प्रभावित हुवी। 'छंद राव जइतसी रउ' में बाबर रै पुत्र कामरान रौ बीकानेर पर हमलो अर कामरान री पराजय री बात तैस्सीतोरी जी मौलिक ढंग सूं पेश करी।

काळी कळायण ऊमटी ऐ–

राजस्थानी संस्कृति खासकर लोक संस्कृति सूं डॉ. तैस्सीतोरी नै घणौ हेत हो। वै किणी राजस्थानी कन्या सू ब्याव भी करणो चावता हा, इसी धारणा केई विद्वानां व्यक्त करी है। इण में संदेह नीं है कै वै राजस्थानी लोकगीतां रा प्रेमी हा। मूमल, मरवण अर पदमणी रा गीत वां नै चोखा लागता हा।

इण बाबत म्है अेक राजस्थानी कविता भी लिखी है– तैस्सीतोरी अर बीकानेर। दो ओळियां है–

जिन्दगाणी कित्ती मदमाती है?

बीं री ओढ़णी में कितरा हिमकर चिमकता हा...

केई रातां गांवां में रहनै वां भारतीय साहित्य अर संस्कृति रौ अध्ययन कर्‌यो। वै सरीर सूं तो विदेशी हा, पण मन सूं भारतीय हा। बीकानेर रै दूरदराज रै गांवां में जा'र काम करता हा। विपरीत मौसम री वां नै परवाह नीं ही। मोरखाण (नोखा) में आपरौ शिलालेख भी है। वां ५०० शिलालेखां री विवरणिका त्यार करी।

संस्कृति री दीठ सूं वांरौ काम सरावण जोग है। पुरातत्व रौ काम घणी मेहनत सूं कर्‌यो। पल्लू गांव (बीकानेर) जा'र वै १०वीं सदी री सरस्वती जी री दो प्रतिमावां लाया। अेक दिल्ली संग्रहालय में अर अेक बीकानेर राजकीय संग्रहालय में राख्योड़ी है।

डॉ. तैस्सीतोरी केई विद्वानां रै सम्पर्क में आया हा। बीकानेर महाराजा गंगासिंह जी तो वांनै अठै लाया ई हा। पं. रामकरण आसोपा, किशोरी दान चारण, बीठू सीताराम (जोधपुर) इत्याद सूं सम्पर्क रैयो। बीकानेर में डॉ. तैस्सीतोरी कोठी नं. ४ में रैया अर अठै हिन्दी में केई खत लिख्या।

'मृत्यु तेरा अंक हिमानी' (मौत री गोद बर्फ जिसी हुवै)– प्रसाद जी रा अे शब्द चिरंतन सत्य नै अंकित करै। मरुभौम में घूमण आळै डॉ. तैस्सीतोरी नै माताजी रै निधन पर इटली जाणो पड़्यो। १७ अप्रैल १९१९ ई. नै वै अठै सूं रवाना हुया, पण मां रा अंतिम दरसन कोनी कर सक्या। दुखी हौर वै बठै थोड़े दिन ई रैया। ११ नवम्बर १९१९ नै भारत पाछा आया। वां आपणी डायरी में लिखो– 'इस कमरे में बिताए कुछ क्षण, मैं चाहता हूँ, वर्ष बन जाएं।'

उमर ख्याम आपणी अेक रुबाई में लिख्यो हो– जिण रौ अंग्रेजी उल्थौ फिट्‌जजेरल्ड कर्‌यो हो–

'अदृश्य अंगुलियां (नियति) लिखती जावै, पण आपरौ दरद का परिहास बीं (लेख) सूं अेक शब्द भी हटा कोनी सकै।'

डॉ, तैस्सीतोरी नै बीकानेर पूगणै रै पछै निमोनिया होयम्यो अर २२ नवम्बर १९१९ नै खुद रै अधूरे कामां रो दरद हिवड़ै में लेय'र मरु-मेघ रौ बो प्यासो पपीहो हमेशा सारू चालतो रैयो। सर्किट हाउस रै लारै बण्योड़ी वां री समाधि आज भी वां री ओळूं में मौन है। 'सावण बीकानेर' रा गीत गावण आळो ओ मुसाफिर अठै माटी री चादर ओढनै सोय रैयो है।

साभार : जागती जोत

अद्‌भुत प्रसंग

एक व्यक्ति ने लंदन में ज़मीन ख़रीद उस पर आलीशान घर बनाया। भूमि पर पहले से ही एक खूबसूरत स्विमिंग पूल और पीछे की ओर एक 100 साल पुराना लीची का पेड़ था, उन्होंने वो भूमि उस लीची के पेड़ के कारण ही ख़रीदी थी, क्यूँकि उनकी पत्नी को लीचियाँ बहुत पसंद थी।

कुछ अरसे बाद मरम्मत के समय उनके कुछ मित्रों ने सलाह दी कि उन्हें किसी वास्तु शास्त्र विशेषज्ञ की सलाह लेनी चाहिए।

मित्रों का मन रखने के लिए उन्होंने बात मान ली और हांग कांग से 30 साल से वास्तु शास्त्र के बेहद प्रसिद्ध मास्टर काओ को बुलवा लिया।

उन्हें हवाई अड्डे से लिया, दोनों ने शहर में खाना खाया और उसके बाद वो उन्हें अपनी कार में लेकर अपने घर की ओर चल दिए। रास्ते में जब भी कोई कार उन्हें पार करने की कोशिश करती, वो उसे रास्ता दे देते।

मास्टर काओ ने हँसते हुए कहा आप बहुत सावधानीपूर्वक गाड़ी चलाते हैं, उसने भी हँसते हुए प्रत्युत्तर में कहा लोग अक्सर ओवरटेक तभी करते हैं जब उन्हें कुछ आवश्यक कार्य हो, इसलिए हमें उन्हें रास्ता देना चाहिए।

घर के पास पहुँचते-पहुँचते सड़क थोड़ी संकरी हो गयी और उसने कार थोड़ी और धीरे कर ली, तभी अचानक एक हंसता हुआ बच्चा गली से निकला और तेज़ी से भागते हुए उनकी कार के आगे से सड़क पार कर गया, वो उसी गति से चलते हुए उस गली की ओर देखते रहे, जैसे किसी का इंतज़ार कर रहे हों, तभी अचानक उसी गली से एक और बच्चा भागते हुए उनकी कार के आगे से निकल गया, शायद पहले बच्चे का पीछा करते हुए।

मास्टर काओ ने हैरान होते हुए पूछा - आपको कैसे पता कि कोई दूसरा बच्चा भी भागते हुए निकलेगा?

उसने बड़े सहज भाव से कहा, बच्चे अक्सर एक-दूसरे के पीछे भाग रहे होते हैं और इस बात पर विश्वास करना संभव ही नहीं कि कोई बच्चा बिना किसी साथी के ऐसी चुहल और भाग दौड़ कर रहा हो, मास्टर काओ इस बात पर बहुत ज़ोर से हंसे और बोले की आप निस्संदेह बहुत सुलझे हुए व्यक्ति हैं।

घर के बाहर पहुँच कर दोनों कार से उतरे, तभी अचानक घर के पीछे की ओर से ७-८ पक्षी बहुत तेज़ी से उड़ते नज़र आए। यह देख कर उसने मास्टर काओ से कहा कि यदि उन्हें बुरा न लगे ते क्या हम कुछ देर यहाँ रुक सकते हैं?

मास्टर काओ ने कारण जानना चाहा उसने कहा कि शायद कुछ बच्चे पेड़ से लीचियाँ चुरा रहे होंगे और हमारे अचानक पहुँचने से डर के मारे बच्चों में भगदड़ न मच जाए, इससे पेड़ से गिर कर किसी बच्चे को चोट भी लग सकती है।

मास्टर काओ कुछ देर चुप रहे, फिर संयत आवाज़ में बोले मित्र, इस घर को किसी वास्तु शास्त्र जाँच और उपायों की आवश्यकता नहीं है।

उसने बड़ी हैरानी से पूछा ऐसा क्यूँ?

मास्टर काओ बोले : "जहां आप जैसे विवेकपूर्ण व आसपास के लोगों की भलाई सोचने वाले व्यक्ति उपस्थित/विद्यमान होंगे - वो स्थान/संपत्ति वास्तु शास्त्र नियमों के अनुसार बहुत पवित्र-सुखदायी-फलदायी होगी। जब हमारा मन व मस्तिष्क दूसरों की ख़ुशी व शांति को प्राथमिकता देने लगे, तो इससे दूसरों को ही नहीं, स्वयं हमें भी मानसिक लाभ-शांति-प्रसन्नता प्राप्त होती ही है, ये लाभ किसी शास्त्र के नियम का मोहताज नहीं है"।

आलेख

स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की क्रांतिकारी भूमिका में राजस्थान का प्रभाव

– रतन लाल बंका
राँची, झारखण्ड

शीर्षक देखकर चौंकिए मत। राजस्थान एक अनुपम प्रदेश है। इसके रक्त सिंचित रजकण स्वर्णीम आभा से आलोकित हैं। यहाँ शौर्य, श्रृंगार और भक्ति की त्रिवेणी बही है। बलिदान बच्चों का खिलौना है। सतीत्व की रक्षा के लिए यहां की वीरांगनाओं ने अग्नि को गले लगाया है। जन्म से ही माताएं शिशुओं को शौर्य की, भक्ति की, त्याग की लोरियां सुनाती हैं। यहां स्वतंत्रता की एक अनन्त चाह है। भक्ति में सहज मुक्त की भावना है। यहां मेघ मुक्त आकाश है। सूर्यदेव के प्रचण्ड ताप से तपती गृष्म है, तो शीत में ठिठुरती रातें हैं। मौसम की प्रतिकूलता है। इस प्रतिकूलता को गले लगाने वाले लोग जीवट वाले ही होंगे, जिनके रक्त में जुझारूपन के संघर्षशील जीवाणु रहते हैं। यहां का कण-कण समरांगण रहा है और यहां के जन-जन में उद्‌भट शौर्य रहा है। राष्ट्र का यह भूखण्ड अद्‌भुत रूप से अनुपम रहा है। राजस्थान का साहित्य गूढ़, विशाल और अथाह है पर उसे ढंग से संकलित नहीं किया जा सका है। जगह-जगह गीतों में, कहावतों व मुहावरों में, दोहों में, बातों में, उपदेशों में, अर्चना और भाटों के गीतों में बिखरा पड़ा है। राजस्थान केवल शूरवीरों का ही प्रदेश नहीं बल्कि हृदय की सुकोमल अनुभूतियां इसकी स्वच्छ धारा बनकर बही है। यह प्रदेश सन्तों, साधकों व भक्तों की लीलाभूमि भी रहा है। राजस्थान का कवि कोरा कल्पनाशील न होकर जीवन का सच्चा चित्रकार है। उद्योग एवं व्यापार जगत में भी २० वीं शदी में मारवाड़ी समाज ने अपना परचम लहराया है। राजस्थान को वर्तमान पर विश्वास है, इसलिए भविष्य के लिए संग्रह करता है, वर्तमान को कष्ट में रखकर भी भविष्य को सुरक्षित रखना चाहता है। कृपणता में रहकर भी त्याग की भावना अक्षुण्ण है। बंगाल वर्तमान को पूर्ण जीना चाहता हैं भविष्य की जोखिम के प्रति कोई व्याकुलता नहीं है। उसे संगीत में चैन मिलता है, उसमें खोया रहता है। कृपणता नहीं है। संग्रह होता है अल्प अवधि के लिए – खुलकर जीने के लिए। भविष्य की भी चिन्ता नहीं करता। बंगाल का नाम आते ही आभास होता है क्रांती का। विगत में चलें (आजादी के पहले) तो स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत भारत का एक चित्र उभर कर आता है। बंगाल में भी छटपटाहट शुरु हो जाती है। बंगाल में जागृत हुई इस चेतना के पीछे राजस्थान का इतिहास रहा है जिसकी जानकारी बंगाल को कर्नल जैम्स टॉड द्वारा रचित "एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान" है। कर्नल टॉड का राजस्थान में प्रवास काफी लम्बे समय तक रहा और उन्होंने राजस्थान के इतिहास की खोजबीन शुरू की तो उन्हें राजस्थान के बारे में अद्‌भुत जानकारीयाँ हासिल हुई। उस समय के रजवाड़ों से, ऐतिहासिक धरोहरों से, जनमानस से, भाटों से, भीती चित्रों से, पुरातत्व खोज से, कर्नल जेम्स टॉड ने बहुत कुछ संग्रहित किया। राजस्थान नाम भी उनकी ही देन है। सन् १८२९ में कर्नल जेम्स ट ॉड ने लन्दन में अपनी अमर कृति "Annals and Antiquities of Rajasthan" – दो खण्डों में प्रकाशित की।

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, सुप्रसिद्ध भाषाविद् ने यह स्वीकार किया कि "राजस्थान" नाम एक विशेष मर्यादा के साथ हम लोग स्मरण करते हैं, खासकर हिन्दुओं में और शिक्षत लोगों में। मुख्यतः एक विदेशी के राजस्थान के प्रति प्रेम के कारण ऐसा सम्भव हो पाया। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी स्वीकार किया कि राजस्थान में अपने रक्त से जो साहित्य निर्माण किया है, उसकी जोड़ का साहित्य और कहीं भी नहीं मिलता। स्वामी विवेकानंद बंगाल और राजस्थान की आत्माओं को मिलाने वाले परम सेतु हैं। उनके अनुसार बंगाल साहित्य की समृद्धि में राजस्थान का सहयोग कर्नल टॉड के राजस्थान के माध्यम से दो तिहाई है। डॉ. सुकुमार सेन का कथन है "The beginning of the nineteenth century introduced English language and European thought's in Bengal. Bengali which never had any pure literatue now began to develop. The concept of literature was to some extent changed. The writers who had English models before them had nothing to do with religion, although they did not shake the Puranic tradition of religion and morality. To those new writer Tod's Annals & Antiquities of Rajasthan opened rich field of new and delectable subject matter for their literary creations ("Rajasthan and Bengal in literary contact"- Dr. Sukumar Sens's lecture on 10-12-75 at the Rajasthan Information Centre, Kolkata"

हर किसी के मस्तिष्क में यह प्रश्न उठता है कि आखिर बंगाल अपने साहित्य सृजन एवं स्वतंत्रता अभियान में राजस्थान की ओर ही क्यों आकृष्ट हुआ। विश्लेषण करने से कुछ प्रमुख कारण नजर आते है :

१) मातृभूमि की स्वतन्त्रता का लक्ष्य पूरे भारतवर्ष में था। बंगाल भी अछूता नहीं था। स्वतंत्रता आन्दोलन में बंगाल की भूमिका अतुलनीय रही है।

२) अंग्रजी सरकार बंगाल को दो टुकड़ों में विभाजित करना चाहती थी जिसका "बंग भंग" का नामकरण किया गया ताकि बंगाल की शक्ति को क्षीण किया जा सके। बंगाल इसके लिए कतई तैयार नहीं था।

३) बंगाल के पास समय के अनुरूप अपनी कोई साहित्यिक विरासत नहीं थी जिसके आधार पर क्रांति का बिगुल फूंका जा सके। यह अभाव खटकने वाला था।

४) बंगाल के पास अपना कोई गौरवपूर्ण इतिहास नहीं था जिसके आधार पर राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत किया जा सके।

५) उसी काल खंड में कर्नल जेम्स टॉड की अमर कृति "Annals and Antiquities of Rajasthan" प्रकाशित होकर भारत में आई जिसमें राजस्थान के शौर्य का विस्तृत विवरण था।

६) बंगाल में उस समय तक अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो चुका था। कर्नल की पुस्तक ने साहित्यकारों को सामग्री उपलब्ध करायी। उसी आधार पर बंगाल में साहित्य सृजन का काम द्रुतगति से शुरु हुआ। बंगालवासियों में इस नव सृजित साहित्य ने स्वतन्त्रता अभियान की चेतना जागृत कर दी।

To your taste buds, with love...

Refreshingly, yours.

Indulgently, yours.

Addictively, yours.

Spicily, yours.

Healthily, yours.

Nourishingly, yours.

Delightfully, yours.

Obsessively, yours.

Temptingly, yours.

Passionately, yours.

Snackingly, yours.

Yours Tastefully Anmol™

celebrating 25 years

BISCUITS

www.anmolindustries.com | Follow us on:

PHONEX ROADWINGS

STEVEDOR & SHORE HANDLING AGENT

Our Services

- Port Stevedoring & Cargo Handling of Both Bulk Break bulk cargo
- Shipping / Steamer Handling Agent
- Road Transportation
- In bound & Out bound Logistics
- Container Freight Services

A-1/46/1, New Paharpur Road,
Rabindranagar, Kolkata – 700 066
E-mail : phonex.roadwings@gmail.com
roadwingsinternational@gmail.com

PIC - Nikunj Gourisaria , Mob. 9833933729, E-mail : nikunj.gourisaria@gmail.com

तत्कालीन बंगाल के साहित्यकारों ने जन-जन में वीर हम्मीर, बाप्पा रावल, महाराणा प्रताप, राणा सांगा, वीर दुर्गादास, रानी पद्मिनी, कर्मा देवी, पन्ना धाय, कृष्णा कुमारी, मीरा बाई, जसनाथ, सन्त दादू, बाबा रामदेव, बाबा निरंजन, बाबा रामस्नेही, पृथ्वीराज, चण्डराज, राजसिंह, अभय सिंह, राणा कुम्भा आदि अनेकों वीरों–वीरांगनाओं, भक्तों, साधुओं, नायकों की कीर्तीगाथा, शौर्य, त्याग, भक्ति, साधना, बलिदान आदि का चित्रण करके नव जागृति का संचार कर दिया। साहित्यकारों ने इस नव जागृति का संचार काव्य, नाटक, उपन्यास, लघु कथा आदि के माध्यम से किया। संक्षेप में यहाँ साहित्यकारों के नाम और उनकी रचनाओं का उल्लेख करना चाहूँगा –

बंगीय काव्य में राजस्थान

रंगलाल बंधोपाध्याय : पद्मिनी उपाख्यान, कर्मा देवी, शूर सुन्दरी नारी
विपिन बिहारी नन्दी : सचित्र सप्तकाण्ड राजस्थान, चन्द (महाकाव्य)
स्वर्ण कुमार देवी (रवीन्द्रनाथ ठाकुर की वहन) : खड्ग परिणये
प्यारी शंकर गुप्त : महाराणा प्रताप सिंह
राजेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय : राजमंगल
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : नकलगढ़, होरी खेला, विवाह, पणरक्षा आदि
बनवारी लाल राय : जयावती
राज कुमार नन्दी : वीरांगना पकोत्तर
प्रसन्न कुमार नाग : राजपुताना
यादवानन्द राय : वीर सुन्दरी
प्रफुल्लमयी देवी : पन्ना धाय

बंगीय नाटकों में राजस्थान

माइकेल मधुसूदन दत्त : कृष्ण कुमारी
गिरीशचन्द्र घोष : आनन्द रहो, राणाप्रताप (अपूर्ण) चण्ड, कममेती बाई
ज्योतिन्द्रनाथ ठाकुर : सरोजनी अथवा चितौड़ आक्रमण का नाटक, अश्रुमति
द्विजेन्द्र लाल राय : तारावाई, प्रताप सिंह, दुर्गादास, मेवाड़ पतन
रंगलाल बन्धोपाध्याय : पद्मिनी उपाख्यान, प्रतापादित्य, पद्मिनी, रघुवीर, बंगे ठाकुर
खिरोद प्रसाद विद्याविनोद : अहेरिया, हमीर
गंगाधर चट्टोपाध्याय : तारावाई
शरत चन्द्र डे : शिलादित्य
मनमोहन राय : जागरिता अथवा मेवाड़ कीर्ति
गिरिचा मोहन नियोगी : मेवाड़ महिमा और राजपूत गरिमा
ज्योतिष चन्द्र लाहिड़ी : चितौड़ कुमार
हरिपद चट्टोपाध्याय : पद्मिनी
निशिकान्त वसुराय : बप्पाराव
प्रमथ नाथ बन्धोपाध्याय : उदम सिंह, हमीर
नारायण चन्द्र बसु : हमीर
धूर्जटि अधिकारी : राणा सांगा
प्रिय कुमार चट्टोपाध्याय : अरि सिंह
मनीन्द्रनाथ मजुमदार : राणा संग्राम सिंह
निवारण चन्द्र चक्रवर्ती : मेवाड़ गौरव
शैलेन्द्रनाथ घोष : पन्ना
प्रफुल्लमयी देवी : धात्री पन्ना
मौलवी मोहम्मद अब्दुल मौनमः मेवाड़ मिलन, अमर सिंह चरित्र
रामकृष्ण राय : मीरा बाई
गिरीन्द्र मोहिनी दासी : सन्यासिनी
अमृतलाल वसु, विजय बसन्त
हरीनाथ मजुमदार : विधाता
योगेन्द्रनाथ बसु : पृथ्वीराज
भोला नाथ मुखोपाध्याय : राणा कुम्भा
अधीर चन्द्र काव्यतीर्थ : मेवाड़ कुमारी
रामप्रताप गुप्त : भारत ललना
सचीन्द्रनाथ सेनगुप्त : पन्ना धाय
यगनेश्वर चौधरी : राजपूत कीर्ति

बंगीय उपन्यासों में राजस्थान

स्वर्ण कुमारी ठाकुर : दीप निर्माण, मिराज राज, विद्रोह
बंकिमचन्द्र चटर्जी : राम सिंह, दुर्गेश नन्दिनी
रमेशचन्द्र दत्त : माधवी कंकण, राजपूत जीवन संध्या
दामोदर मुखोपाध्याय : प्रताप सिंह, तिलोत्तमा, नवाब नन्दिनी
रोहिणी कुमार सेनगुप्त : चण्डगुप्त
हरान चन्द्र रक्षित : बंगेर शेषवीर, प्रतापादित्य
सीताराम चक्रवर्ती : सरोज सुन्दरी
दयालचन्द चन्द्रघोष : हम्मीर
बरदाकान्त मजूमदार : कर्म देवी
मनमोहन राय : सतीर मूल्य
हरिमोहन मुखोपाध्याय : जमावती उपाख्यान, कमला देवी
किशोरी मोहनराय : हम्मीर
आशुतोष घोष : प्रभावती
ननीलाल बन्धोपाध्याय : अमृता पुलिन
अविनाश चन्द्र दत्त : बिजली
बसन्त कुमार मित्र : रणोद्मादिनी
प्रमथनाथ मित्र : योगी
हेमचन्द्र बसु : मिलन कानन
कालीवर भट्टाचार्य : अकाल कुसुम अथवा अजमेर की राजतनया
उपेन्द्रनाथ मित्र : प्रताप संहार
आशालता : भ्रमर
निखिल नाथ राय : राजपूत वीरांगना
सत्यचरण चक्रवर्ती : रानी दुर्गावती, संयुक्ता
शतीशचन्द्र चट्टोपाध्याय : वीरपूजा
सुरेन्द्रनाथ राय : पद्मिनी
शरदेन्दु बन्धोपाध्याय : राजद्रोही
अवधूत : गुरू तीर्थ हिंगलाज
बिमल मित्र : राजपुतानी
बारींचन्द्र नाथ दास : मीरा और मल्हार

लगभग एक शताब्दी के कालखण्ड तक बंगाल के साहित्यकारों ने राजस्थान के शूरवीरों और वीरांगनाओं का यशगान कर अपनी उदारता, अपने वृहद दृष्टिकोण और गुणग्राह्यता का परिचय दिया है। एक दूसरे से दूर बसे प्रांतों के मिलन का सेतु निर्माण किया है। मीरा को अपनाकर अपनी भक्ति भावना का परिचय दिया है। सन्त दादू का कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा प्रशंसा करना अपने आप में मायने रखता है। दो विपरीत धाराओं का यह मिलन – एक की भूमि के रजकण रक्त सिंचित तो दूसरी शस्य श्यामला भूमि सरिता के मीठे जल से प्लावित, एक शुष्क मरूधारा दुसरी हरियाली से आच्छादित। कवि वियोगी हरि के शब्दों में:

सौर्य–सरित–सिंचित जहाँ जूझन खेत हमेस।
मारवाड़ अस देस को कहत मूढ़ मरूदेस।।

दो विपरीत परिस्थितियों, स्थितियों, वातावरण में जन्मे प्रदेशों का अन्तर्मिलन सदा प्रफुल्लित रहे, यही कामना है।

संदर्भ पुस्तक :

पं. अक्षय चन्द्र शर्मा द्वारा सम्पादित "राजस्थान : बंगीय दृष्टि मे"।

आलेख

समाज के सम्बन्ध में भावी योजनाएँ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मैं आभारी हूँ कि अल्पावधि में ही मेरी भेंट के लिए बैठक आयोजित करने का कष्ट किया। जिसमें पधारे सभी महानुभावों से विचार–विमर्श काफी ज्ञानवर्धक रहा। मैं प्रारंभ से ही सम्मेलन के कार्यकलापों से अवगत रहा हूँ जिसके सम्बन्ध में, मैंनें अपनी पुस्तक 'द मारवाड़ी हेरिटेज' में संक्षिप्त रूप से सम्मेलन के साथ–साथ मारवाड़ी समाज की अन्य महत्वपूर्ण संस्थाओं जिसमें सम्मेलन व युवा मंच व समाज से सम्बन्धित पुरानी व नई संस्थाओं का विस्तृत विवरण दिया जा रहा है। साथ ही मारवाड़ी समाज के सामाजिक, आर्थिक–राजनीतिक योगदान के विवेचनापूर्ण शोध अध्ययन का द्वितीय शताब्दी से लेकर अब तक के देश के विकास में दिए गए बहूमुखी योगदान का पहली बार उल्लेख किया जा रहा है। जिसमें आजादी के आंदोलन में मारवाड़ी समाज की आहूतियों को विशेष तौर से वर्णित किया गया है।

मारवाड़ी समुदाय के बहुआयामी योगदान पर शोध करने के लिए सन् १९९० में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मारवाड़ी एंट्रप्रन्योरशिप, जयपुर (आई.आई.एम.ई.) की स्थापना करने की घोषणा तत्कालीन राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत द्वारा कलकत्ता में की गई थी। अल्प समय में ही संस्था को भारत सरकार के कई मंत्रालयों द्वारा अनेकानेक मान्यताएं प्रदान की गई तथा इसकी शोध एवं जन–कल्याण की उपलब्धियों को मध्यनजर रखते हुए भारत सरकार के गजट व राजस्थान के राजपत्र में इसका प्रकाशन किया गया। संस्था द्वारा राष्ट्रीय हित के कई महत्वपूर्ण विषयों पर अनेकानेक शोधपूर्ण कॉफी टेबिल बुक का प्रकाशन किया है। इन्हें शिक्षाविदों से व्यापक सराहना मिली है और भारत के प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों, योजनाकारों, शिक्षाविदों, उद्योगपतियों और पत्रकारों द्वारा समान रूप से सराहना की गई है। व्याख्यात्मक पुस्तक समीक्षाएं अनेकानेक राष्ट्रीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में छपी है। यह नो प्रॉफिट नो लॉस पर आधारित शोध संस्थान है, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय का एक साईन्टिफिक एण्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन है। इस सम्बन्ध में कोई रेवेन्यू प्राप्त होता है तो उसका विनियोजन भावी शोध कार्यो में होता है जिसका लाभ किसी व्यक्ति विशेष को नही होता है तथा आयकर विभाग द्वारा इसे ८०जी में छूट प्रदान की गई है।

संस्था का प्रमुख उद्देश्य मारवाड़ी समुदाय के बहुआयामी योगदान पर सतत् शोध कार्य करना तथा उच्च तकनीकि प्रवासी राजस्थानी म्यूजियम (संग्रहालय) की स्थापना करना है। जो अपनी तरह का पहला, अद्वितीय, स्मारकीय, कई कला केन्द्रों और दीर्घाओं के साथ होगा। जो समाज के बहुप्रतीष्ठित महानुभावो व समाज द्वारा देश के विकास में दिए गए योगदान का सजीव व स्वर्णीम उदाहरण होगा। इसका मुख्य उद्देश्य समाज की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का संग्रह, संरक्षण और प्रदर्शन करना होगा। इसके साथ ही एक विशाल पुस्तकालय ब्रिटिश व अमेरिकन सेन्टर के साथ स्थापित किया जाएगा जिसमें ऑनलाईन तथा ऑफलाईन सेवाएं प्रदान की जाएगी। शिक्षा और अनुसंधान के सम्बन्ध में विश्वस्तरीय सेवाएं और सूचनाओं का प्रवाह होगा। प्रस्तावित मल्टीमिडिया केन्द्र आईटी एकीकरण की दिशा में एक अनूठा प्रयोग होगा। हाई-टेक सुविधाएं, आधुनिक, विशाल और अच्छी तरह से सुसज्जित कंप्यूटर प्रयोगशालाओं में प्रदान की जाएगी। इस केन्द्र द्वारा विद्वानों और छात्रों को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम और व्याख्यान के दूरस्थ शिक्षा तक पहुँचने और लाभ उठाने का विशेषाधिकार होगा। इसके लिए संस्था को राज्य सरकार द्वारा जयपुर में भूमि आवंटित की गई थी। जिस पर अब तक दस करोड़ रूपए से अधिक का विनियोजन किया गया है और आगे को निर्माण गतिशील है। इसमें सहयोग देने वाले स्वर्गीय श्री बी.एम. खेतान, श्री गंगाप्रसाद बिड़ला, श्री जी.डी. कोठारी, श्री एन.के. केजरीवाल, श्री कमल मोरारका, श्री राहुल बजाज इत्यादि रहें है। बाद में संस्था का नाम परिवर्तित किया गया लेकिन आज भी इसे आई.आई.एम.ई के रूप में ही जाना जाता है।

संस्था विगत तीस वर्षों से मारवाड़ी समाज पर शोधरत है। जिसके लिए मारवाड़ी अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई है। जिसके माध्यम से समाज के सम्बन्ध में ज्ञात-अज्ञात तथ्यों को सामने लाना इसका उद्देश्य होगा। यह मारवाड़ियों के गौरवशाली अतीत और वर्तमान के बारे में जागरूकता पैदा करेगा जिससे समाज की समृद्ध विरासत को संरक्षित करने के लिए हर प्रकार का प्रयास किया जाएगा, सभी राज्यों में विचार–गोष्ठियां आयोजित होगीं, वृत्तचित्र व फिल्में तैयार की जाएगी, युवा मारवाड़ियों को मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाएगी। प्रमुख रूप से देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, अनुसंधान, साहित्यिक विकास में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर भी अनेकानेक रूचिप्रद ग्रन्थ तैयार कर उसे देश के साथ ही दुनिया भर के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों, म्यूजियम, कला-दीर्घाओं, अन्तराष्ट्रीय संगठनों, भारत के लोकसभा व राज्यसभा के सदस्यों, सभी राज्यों के राज्यपालों व मुख्यमंत्रियों को भिजवाया जाएगा जिससे समाज के बढ़े पैमाने पर दिए गए बहुमुखी योगदान व जन-कल्याण कार्यों की जानकारी को विशिष्ठ और विशेष पहचान मिल सके। मारवाड़ी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए योगदान के संकलन के लिए देश भर में समाज की अनेकानेक विभूतियों से विचार–विमर्श का अवसर मिलता रहा है। मेरे इन प्रयासों में स्वर्गीय बी.एम. बिड़ला, श्री जी.पी. बिड़ला, श्री आदित्य विक्रम बिड़ला, श्री भगवती प्रसाद खेतान, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंघका, श्री भागीरथ कानोड़िया, श्री रामेश्वरलाल टांटिया, श्री भंवरमल सिंघी, श्री मेजर रामप्रसाद पोद्दार, श्री सोहनलाल दुग्गड़, श्री रामकृष्ण बजाज, श्री हनुमानबक्श कनोई, श्री ओ.पी. जिंदल, श्री ईश्वरदास जालान, श्री कमलापत सिंघानिया, श्री देवीप्रसाद खेतान, श्री रामनाथ गोयनका, श्री सीताराम सेकसरिया, श्री नन्दकिशोर जालान, श्री कमल मोरारका, श्री राहुल बजाज इत्यादि शामिल रहें। यह सूची काफी लम्बी है लेकिन स्थानाभाव के कारण कुछ ही नाम दिए जा रहे है। जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने काफी प्रभावित किया। आज भले ही इन विभूतियों की उपस्थिति नहीं हो लेकिन इनकी उपलब्धियों से समाज ही नहीं बल्कि पूरा देश गौरान्वित हुआ है।

– डॉ. डी.के. टकनेत
व्यवसायिक इतिहासज्ञ एवं लेखक

दो लघुकथावां

– इन्द्रजीत कौशिक

(१)
भोला रो भगवान

सगळे गांव खातर बो भोलो इज हो। जेड़ो नांव बेड़ो सुभाव। 'भोला, अठे आव। जा म्हारे खातर बजार स्यूं चीणी तो लाय दे। कोई केवंतो बो झट दौड़ पणो काम कर देवंतो। काम खातर नटणो तो बीं रे सुभाव म इज नीं हो। सफाई सूं लेय'र पग दबावणा, रोटी बणा देणी, पाणी ला देणो। मेऊं पिसा लाणो जेड़ा हरेक काम बो सांगोपांग कर देवंतो।

कोई राजी हुय पणो कीं खाण खातर दे देवंतो तो खा लेवंतो अर कठेई पड़ जावंतो। लोक केवंता इण रा मां बाप रो ओ एकज बेटो हो। किणी बीमारी वणां ने छुटपण म ईज पाछा कर दीयो, जद भोलो पांच-छह मईना रो हो।

इणरी उमर रो फायदो उठा पणा रिस्तेदार इणरो मालो-टालो अर घर बार जीमगा। जब सूं ओ बापड़ो गेलो सोक रेवण लागगो।

पण भोला रे मन म किणी बात री आंट नीं ही। पण जद कदेई बो स्कूल जावंता टाबरां कांनी देखतो तो उदास हुय जावंतो। चोखी फूठरी डरेस अर बस्तो ले पणां स्कूल जावंता टींगरा ने जद तांई देखतो रेवंतो जित्ते तांई बे स्कूल म नीं बड़ जाता।

'थूं कांई देखे भोला? थने ई पढ़णो है कांई?' एक दिन उण स्कूल रा मास्टर शर्माजी भोला ने पूछ्यो तो बो आपरी नाड़ नीची कर लीवी।

'म्हारे पढ़ण री घणीज मन म आवे गुरुजी पण अबे कांई हुय सके। इण उमर म म्हने कुण पढ़ासी?' भोलो आ बात बोल्यो तो शर्माजी जाणगा क ओ पढ़णो चावे।

'बेटा, पढ़ाई सरू करण री उमर नीं हुया करे। थूं पढ़णो चावे आ बात सुण म्हारी आत्मा परसन हुयगी। आज सूं थारी पढ़ाई रो जिम्मो म्हारो। थूं काम भी करजे अर पढ़ाई भी। देखां थारी लगन कत्ती ऊंडी है!' शर्माजी आ केय पणो बीं ने स्कूल में पढ़ावणो सरू कर दीनो।

भोलो झांझरके सूं पैला उठ पणो सगळा काम करियां पछे स्कूल जावमो सरू कर दीयो। शर्माजी बीं रे रेवण री वेवस्था आपरे अठे इज कर मेली ही।

भोला री लगन सागीड़ी निकळी। सगळां सूं चोखा नंबर ला पणो बो परीक्षा पास करतो गयो। काम करण रो सुभाव बीं री पढ़ाई म आडो नीं आयो।

'भोला, थूं आ बात साची केवाय दी क लगन होवे तो इंसान खातर कीं मुस्किल नीं हुआ करे।' जके दिन बो दसवीं टोप नंबरां सूं पास करी तो शर्माजी बीं ने आपरे गले सूं लगा मेल्यो।

'मास्टरजी, कया करे के भोला रो भगवान हुया करे। थे भोला न पढ़ा पणा इण बात न सबित कर दीवी। म्हारा भगवान तो थे इज हो।' आ केय'र भोलो शर्माजी रे पगां पड़ियो तो सगळे गांव रा लोग गळगलाइजगा।

(२)
पारस पत्थर

'म्हने नीं करणो ब्याव।' सुमन जियां ई आ बात कैयी, धापू बिंया ई माथै ऊपर तईड़ लेय लियो।

'थनै ठाह तो है छोरी थूं कांई केय रैयी है। थारा लखण देख पणी हूं पैला ई समझगी क थूं म्हारी नाक कटा'र रैसी।'

'मां हूं थारी पेट जाई हूँ, दूजी कोनी। थूं तो ईया मती बोल। म्हने आगे भणनो है, अबार हूं बींद-बींदणी जेड़े चकरां म नीं पड़नी चावूं। सुमन केवंती थकी गळगलाइजगी।

'देख दीकरी, लुगाई रे जमारे म नूवे घर जावणो इज पड़े। पढ़ाई रो कांई, आज छूटे काले छूटे। म्हारो केवणो मानले, नट मती ना। जे सागरे आळां रे जचे तो थारो पढ़ण-लिखण रो सोख पूरो करती रईजे।' धापू बीं ने खासी ऊंची-नीची लीवी पण सुमन आपरा पग पाछा नीं लिया तो नीं लिया।

'धापू म्हारी एकबात ध्यान राखजे। म्हारे लाडेसर खातर तो थारी छोरी जेड़ी छतीस मिल जासी पण थूं जिंया जबान दे पी नटगी है, इण खातर थारी छोरी रो रिस्तो कठेई हुय जावे, तो म्हारो नाम मिलखाण नीं।' छोरे रो बाप धापू ने खासी बातां सुणा दीनी।

'पगां धोक खा'र केवूं क म्हारी माँ ने कीं केवण री जरूत कोनी! ब्याव-सगायां जेड़ा रिस्ता जोर-जबरदस्ती रा नीं होया करे। म्हारे छुटपण म वचन दियो होवेला, पण म्हने अबार ब्याव नीं करणो, मतबळ नीं करणो। अबे थे पूठा जाय सको, म्हारे कांनी सूं थे निरवाळा हो।' सुमन दो-टूक पडूतर देय पणी छोरा रे बाप ने सीख देय दीनी।

'बेटी, थूं ओ कांई कर मेल्यो। हूं मिलखाण ने चोखी तर्यां जाणूं। ओ थारा हाथ पीला नीं होवण देवेलो। थूं ई बता, बेटी मां रे घरे कित्ता दिन खटसी?' धापू केवंती-केवती रोवण लागगी।

'मां म्हने थारे इण आंसुवां री सौगन है। म्हारे कारणे थारो माथो कदेई नीचो नी हुवण देवूंली। हूं थारी बेटी हूँ तो बेटे जेड़ी भी हूं।' सुमन री आंख्यां भविष्य रे चानणे सूं जगमग दीसे ही।

सगळे गाँव री केबतां ने कनारे लगा पणी सुमन दिन-रात आपरी पढ़ाई-भिणाई म लागी रेवंती। बा चोखा नंबरां सूं पास हुवंती रैयी अर कॉलेज री पढ़ाई खातर बींने स्हैर जावणो पड्यो तो मां ने बठे आपरे सागे लेयगी। पढ़ाई पूरी कर्यां पछे लगोलग आछी नौकरी लागगी। सरकारी स्कूल री हैडमिस्ट्रेस बण पणी बा पाछी आपरे गांव पूगी तो बीं स्कूल म लाग्योड़ा चपड़ासी न देखतां ई बा हकबकाइजगी। ओ मिनख बोईज हो, जके सूं केई बरस पैला बीं रो ब्याव हुवण आळो हो। पढ़ाई-लिखाई रे पारस पत्थर सुमन ने जिण जिग्यां पोंचाय दीनो, बठे एक सूं बढ़'र एक रिस्ता लाईन लगायोड़ा त्यार ऊभा हा।

– चंदन सागर वैल, बीकानेर

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

श्रीशुक उवाय

सोऽन्तः सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो
दृष्टवा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छा–
न्नारायणाखिलगुरो भगवन्नमस्ते।।

घड़ियाल ने गजेन्द्र को जल में बलपूर्वक पकड़ रखा था जिसके कारण उसे अत्यन्त पीड़ा का अनुभव हो रहा था, किन्तु जब उसने देखा कि नारायण अपना चक्र घुमाते हुए गरुड़ की पीठ पर बैठ कर आकाश में आ रहे हैं, तो उसने तुरन्त ही अपनी सूंड़ में एक कमल पुष्प ले लिया और अपनी वेदना के कारण अत्यन्त कठिनाई से यह शब्द कहे, च्च् हे भगवान्, नारायण, हे ब्रह्मांड के स्वामी! हे परमेश्वर! मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

अजस्य चक्रं त्वजयेर्यमाणं
मनोमयं पञ्चदशारमाशु।
त्रिनाभि विद्युच्चलमष्टनेमि
यदक्षमाहुस्तमृतं प्रपद्ये।।

भौतिक कार्यों के चक्र में, भौतिक शरीर मानसिक रथ के पहिये जैसा होता है। दस इन्द्रियाँ (पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ) तथा शरीर के भीतर पाँच प्राण मिलकर रथ के पहिये के पन्द्रह तीलियाँ बनाते हैं। प्रकृति के तीन गुण यथा सत्त्वगुण, रजस्गुण और तमस्गुण कार्यकलापों के केन्द्रबिन्दु हैं और प्रकृति के आठ अवयव (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि तथा मिथ्या अहंकार) इस पहिये की बाहरी परिधि बनाते हैं। बहिरंगा भौतिक शक्ति इस पहिये को विद्युत् शक्ति की भाँति घुमाती है। इस प्रकार यह पहिया बड़ी तेजी से अपनी धुरी या केन्द्रीय आधार अर्थात भगवान् के चारों ओर घूमता है, जो परमात्मा तथा परम सत्य हैं। हम उन्हें सादर नमस्कार करते हैं।

य एकवर्ण तमसः परं त–
दलोकमव्यक्तमनन्तपारम्।
आसां चकारोपसुपर्णमेन–
मपासते योगरथेन धीराः।।

भगवान् शुद्ध सत्त्व में स्थित हैं, अतएव वे एकवर्ण–ओङ्कार हैं। चूँकि भगवान् अन्धकार माने जाने वाले दृश्य जगत से परे हैं, अतएव वे भौतिक नेत्रों से नहीं दिखते। फिर भी वे दिक् या काल द्वारा हमसे पृथक् नहीं होते, अपितु वे सर्वत्र उपस्थित रहते हैं। अपने वाहन गरुड़ पर आसीन उनकी पूजा क्षोभ से मुक्ति पा चुके मनुष्यों के द्वारा योग शक्ति से की जाती है। हम सभी उनको सादर नमस्कार करते हैं।

न यस्य कश्चातितितर्ति मायां
यया जनो मुह्यति वेद नार्थम्।
तं निर्जितात्मात्मगुणं परेशं
तमाम भूतेषु समं चरन्तम्।।

कोई भी व्यक्ति भगवान् की माया का पार नहीं पा सकता जो इतनी प्रबल होती है कि हर व्यक्ति इससे भ्रमित होकर जीवन के लक्ष्य को समझने की बुद्धि गवाँ देता है। किन्तु वही माया उन् भगवान् के वश में रहती है, जो सब पर शासन करते हैं और सभी जीवों पर समान दृष्टि रखते हैं। हम उन्हें नमस्कार करते हैं।

हमे वयं यत्प्रिययैव तन्वा
सत्त्वेन सृष्टा बहिरन्तराविः।
गतिं न सूक्ष्मामृषयश्च विद्महे
कुतोऽसुराद्या इतरप्रधानाः।।

चूँकि हमारे शरीर सत्त्वगुण से निर्मित हैं अतः हम देवगण भीतर तथा बाहर से सतोगुण में स्थित हैं। अतएव यदि हम भी भगवान् को न समझ पायें तो उन नगण्य प्राणियों के विषय में क्या कहा जाये जो रजो तथा तमो गुणों में स्थित है? भला वे भगवान् को कैसे समझ सकते हैं? हम उन भगवान् को सादर नमस्कार करते हैं।

अम्भस्तु यद्रेत उदारवीर्य
सिद्धन्ति जीवन्त्युत वर्धमानाः।
लोका यतोऽथाखिललोकपालाः
प्रसीदतां नः स महाविभूतिः।।

सारा विराट जगत जल से उद्भूत है और जल ही के कारण सारे जीव बने रहते हैं, जीवित रहते हैं और फलते-फूलते हैं। यह जल भगवान् के वीर्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अतएव इतनी महान् शक्ति वाले पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हर पर प्रसन्न हों।

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

विशिष्ट संरक्षक सदस्य

श्री अनील गोयनका
मे. होटल कुबेर इंटरनेशनल (एस. एस.जी. ग्रुप)
पांचवाँ तल, कुबेर भवन
हेम बरुआ रोड, फैंसी बाजार
गुवाहाटी, असम
मो : ९४३५१३३३३३

आजीवन सदस्य

श्री आलोक कुमार पोद्दार अखाड़ा घाट, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री अमित कुमार डोकानियाँ** झंडापुर बाजार, थाना विहुपुर भागलपुर, बिहार	**श्री अनिल बरलिया** स्टेशन रोड, वार्ड नं.-३, धिमाजी, असम	**श्री अनिल गोठी** अकोला रोड, शेलु बाजार, वासिम, महाराष्ट्र	**श्री अनिल कुमार डोकानियाँ** झंडापुर, विहुपुर, भागलपुर, बिहार
श्री अरुण अगरवाला सिमालगुड़ी, वार्ड नं. २ शिवसागर, असम	**श्रीमती अरुणा कुमारी डोकानयाँ** झंडापुर बाजार, थाना विहुपुर, भागलपुर, बिहार	**श्री अशोक कुमार केडिया** नटकटियागंज बाजार, प. चम्पारण, बिहार	**श्री अशुतोष कुमार जैन** झंडापुर बाजार, थानापुर, भागलपुर, बिहार	**श्री बंशीलाल भाटी** असम
श्री भागवत जाजू पाभोई रोड, सोनितपुर असम	**श्री भगवती प्रसाद हरलालका** छापागुड़ी रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री बिक्रम कुमार जैन** झंडापुर, विहुपुर, भागलपुर, बिहार	**श्री विनोद बोथरा** सिलचर, असम	**श्री विनोद कुमार जैन** झंडापुर बाजार, विहुपुर, भागलपुर, बिहार
श्री बिनोद कुमार पतनी कालेज रोड, शिमलागुड़ी, शिव सागर, असम	**श्री बुद्धमल बैद** सिलचर, असम	**श्रीमती चन्द्रकला तयाल** छतरी बड़ी, गुवाहाटी, असम	**श्री छत्तर सिंह पवार** बी.जी. रोड, सोनितपुर, असम	**श्री चिमन शर्मा** शिमलागुड़ी टाउन, शिवसागर, असम
श्री देबीलाल शर्मा मेन रोड. गोगामुख, धिमाजी, असम	**श्री दीपक हरलालका** सोनारी रोड, शिमलागुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री दीप चंद मारोदिया** कलेज रोड, शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री धनराज सुराना** सिलचर, असम	**श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन** एम.आर. दिवान रोड, गुवाहाटी, असम
श्री दिलीप अग्रवाल विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री दिलीप बिमायिका** सिलचर, असम	**श्री दिलीप कुमार गडिया** गोरा सहन, पू. चम्पारण, बिहार	**श्री दिलीप शर्मा** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री दीन दयाल जालान** शिवसागर, असम
श्री दिनेश अग्रवाल वार्ड नं.-७, धिमाजी, असम	**श्री गणेशलाल कारवाँ** मंगरुलपीर, वासिम, महाराष्ट्र	**श्री गौरव जैन** झंडापुर बाजार, थाना विहुपुर, भागलपुर, बिहार	**श्री गोविन्द मुंधड़ाँ** सिलचर, असम	**श्री हनुमान सुराणा** सिलचर, असम
श्री हरि प्रसाद बिहानी शिमलगुड़ी, मेन रोड, शिवसागर, असम	**श्री हस्तीमल बरड़िया** सिलचर, असम	**श्री ईश्वर शर्मा** शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री जगत संचेती** पाभोई रोड, विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री जगदीश अग्रवाल** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम
श्री जगदीश प्रसाद पारीक सोनारी रोड, शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री जय गोयनका** पाभोई रोड, विश्वनाथ चाली, सोनितपुर, असम	**श्री जय कुमार बरदिया** सिलचर, असम	**श्री जयकिशन भट्टर** गोगामुख, धिमाजी, असम	**श्री जेठमल मारोठी** सिलचर, असम
श्री जुगल किशोर शर्मा गोगामुख, धिमाजी, असम	**श्री कन्हैया डोकानियाँ** झंडापुर, विहुपुर, भागलपुर, बिहार	**श्री लाल चंद तिवारी** सिलचर, असम	**डॉ. लिपीका मोदी** अठगाँव, गुवाहाटी, असम	**श्री महावीर प्रसाद जैन** सिलचर, असम

सम्मेलन के सदस्य बने और बनाएँ!

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्री मांगी लाल सुराना सिलचर, असम	**श्री मनीष जैन** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री मनीष कुमार गोयल** पलटन बाजार, गुवाहाटी, असम	**श्री मनीष कुमार जैन** शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री मनीष कुमार कंनोई** २३, राजा संतोष रोड कोलकाता
श्रीमती मनीषा नवका भोला सेन लेन, गुवाहाटी, असम	**श्री मनोज अग्रवाल** मेन रोड, शेलुपुर बाजार, वासिम, महाराष्ट्र	**श्री मनोज हरलालका** शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री मनोज कुमार सुल्तानियाँ** नारायणपुर, थाना विहुपुर, भागलपुर, बिहार	**श्री मनोज पतनी** सिलचर, असम
श्री मनोज प्रजापत विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री मनोज शर्मा** बाजार रोड, शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री मुलचंद बैच** सिलचर, असम	**श्री मुरली मनोहर अग्रवाल** सिलचर, असम	**श्री नंद लाल बेरिया** शिवसागर, असम
श्री ओम जोशी बी.जी. रोड़, विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री ओम प्रकाश अग्रवाल** सिलचर, असम	**श्री पंकज दसानिज** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री पंकज नाहर** सिलचर, असम	**श्री पवन जैन** सिलचर, असम
श्री पवन कुमार अग्रवाल आमगोला, मुजफ्फरपुर, असम	**श्री पवन कुमार भैया** मेन रोड, गोगामुख, धिमाजी, असम	**श्री पवन कुमार डोकानियाँ** झंडापुर बाजार, भागलपुर, बिहार	**श्री पवन कुमार मस्करा** शिमलगुड़ी टाउन, शिवसागर, असम	**श्री पवन राठी** सिलचर, असम
श्री पवन सिंघानियाँ स्टेशन रोड, धिमाजी, असम	**श्री प्रदीप कुमार गदिया** गोरा सहन, पू. चम्पारण, बिहार	**श्री प्रदीप सुराना** सिलचर, असम	**श्री प्रमोद कुमार पारीक** शिमलगुड़ी,, शिवसागर, असम	**श्री पुष्प लुणियाँ** सोनारी रोड, शिवसागर, असम
श्री राधेश्याम पारीक बी.जी. रोड, विश्वनाथ, चरली, सोनितपुर, असम	**श्री रघुनाथ प्रसाद झुनझुनवाला** टेंगरा इण्डास्ट्रीयल एरिया कोलकाता	**श्रीमती रागिनी गोयल** पलटन बाजार, गुवाहाटी, असम	**श्री राहुल अग्रवाल** लक्ष्मी नारायण रोड, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री राज कुमार जैन** सिलचर, असम
श्री राज कुमार व्यास १, बोनफिल्ड लेन, कोलकाता	**श्री राजेन बेरिया** शिवसागर, असम	**श्री राजेन्द्र बुराकिया** सिलचर, असम	**श्री राजेन्द्र जिंदल** सिलचर, असम	**श्री राजेश भांगड़िया** मेन रोड, शेलु बाजार, वासिम, महाराष्ट्र
श्री राजु शर्मा शिमलगुड़ी टाउन, शिवसागर, असम	**श्री रामचंद्र बड़पोलिया** ३३ए, ताराचंद दत्त रोड, कोलकाता	**श्री रामनिवास बंसल** धिमाजी, असम	**श्री रंजीत अग्रवाल** घोरा सहन, पू. चम्पारण, बिहार	**श्री रतन अगरवाला** शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम
श्री रतन कुमार अगरवाला राजगढ़ रोड, गुवाहाटी, असम	**श्री रवि कुमार तुलस्यान** नरकटियागंज बाजार, प. चम्पारण, बिहार	**श्री रोहित कुमार हरलालका** शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री रोहित गाड़ोदिया** स्टेशन रोड, वार्ड नं.-३ धिमाजी, असम	**श्री संदीप कुमार** थाना विहुपुर, भागलपुर, बिहार
श्री संदीप कुमार अग्रवाल धाहीगाँव, विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री संजय कुमार बिरजराजका** बैंक रोड, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री संजय कुमार डोकानियाँ** झंडापुर बाजार, भागलपुर, बिहार	**श्री संजीव पटवारी** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्रीमती सरोज अगरवाला** राजगढ़ रोड, गुवाहाटी, असम
श्रीमती सीमा जैन एम.आर. दिवान रोड, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती सीमा सोनी** मैकखोवा, गुवाहाटी, असम	**श्री शिवा शर्मा (टिटु)** वार्ड नं.-१, शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री शिव प्रसाद बाजोरिया** सोनारी रोड, शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री श्रीश तापड़िया** २७बी, कैमक स्ट्रीट, कोलकाता
श्री श्याम सुन्दर हेडा बी.जी. रोड़, विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्रीमती सिद्धी चौधरी** बोरा सर्विस, गुवाहाटी, असम	**श्री सीताराम शर्मा** शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्रीमती सोनु चौधरी** बोरा सर्विस, गुवाहाटी, असम	**श्री सुभाष अग्रवाल** शिवसागर, बिदुपुर, असम
श्री सुमन बजाज पटरकुची, गुवाहाटी, असम	**श्री सुनिल कुमार अग्रवाल** शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री सुनील कुमार खेतान** सिकन्दरपुर, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री सुनील निमोडिया** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री सुरेश तपड़िया** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम
श्रीमती स्वीटी कुमारी जैन अठगाँव, गुवाहाटी, असम	**श्री त्रिलोक चंद जैन** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम	**श्री त्रिलोक चंद अगरवाला** सोनारी रोड, शिमलगुड़ी, शिवसागर, असम	**श्री विकाश कुमार अग्रवाल** एफ.ए. रोड, कुमारपाड़ा, गुवाहाटी, असम	**श्री विनय अग्रवाल** विश्वनाथ चरली, सोनितपुर, असम
श्री विशाल कुमार जैन झंडापुर, विहुपुर, भागलपुर, बिहार	**मिस स्वेता इदौंरिया** १६, लेक गार्डन, जालान लेक भिव अपार्टमेंट, कोलकाता	**श्री धनंजय कुमार सिंघानियाँ** ३०७, श्रीनिवास भवन, अपो. गौशाला, देवघर, झारखंड	**श्री ललित कुमार अग्रवाल** गांधी चौक, जगदम्बा सहाय लेन अपर बाजार, रांची, झारखंड	**श्रीमती मधु सिंघानियाँ** के. रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड
श्री महेश सिंघानियाँ के. रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री मनोज कुमार खण्डेलवाल** हाउस नं.-७१, नया सीताराम डेरा एग्रीको, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री नारायण अग्रवाल** २८८, नया सीताराम डेरा एग्रीको, जमशेदपुर, झारखंड	**श्रीमती अर्चना अग्रवाल मुनका** बजरंगी चौक, बादाम बाजार हजारीबाग, झारखंड	**श्री अर्जुन जालान** जालान सदन, कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, राँची, झारखंड
श्री बजरंग अग्रवाल जवाहर नगर, अकोला, महाराष्ट्र	**श्री नारायण दास** राजस्थान भवन, जूना कौटन मार्केट, अकोला, महाराष्ट्र	**श्री राज कुमार शर्मा** एम. आई. डी. सी. फेज-IV, ट्रांसपोर्ट नगर, अकोला, महाराष्ट्र	**श्रीमती संगीता अग्रवाल** बड़कागाँव रोड, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती संजना अग्रवाल** संतोषी माता मंदिर के पास साकची, जमशेदपुर, झारखंड
श्री संजय कुमार अग्रवाल कशीडीह, साकची, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री संतोष छाजेड़** आश्रय नगर, डब्की रोड, अकोला, महाराष्ट्र	**श्री अनिरुद्ध गोयनका** हाऊस नं.-१९२८, सेक्टर-२८, फरिदाबाद	**श्री संजय गोयल** ६८८, सेक्टर-३७ फरिदाबाद	**श्री मनीष कुमार शर्मा** ५बी, जज कोर्ट रोड कोलकाता

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 24th May 2022
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com